SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:55, Issue: 06,
November-2024, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

नवंबर-2024
रु.20/-

श्री पद्मावतीदेवीजी का ब्रह्मोत्सव, तिरुचानूर

दि.28-11-2024 से दि.06-12-2024 तक

दि. 04-10-2024 को तिरुमल श्री बालाजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव के अवसर पर आं.प्र. राज्य सरकार की ओर से रेशमी वस्त्र समर्पित करते हुए आं.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री नारा चंद्रबाबू नायडू जी।

तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में 04-10-2024 को आं.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री नारा चंद्रबाबू नायडू जी को श्री बालाजी के चित्रपट को देते हुए आं.प्र. के धर्मस्व शाखा के मंत्रीजी श्री आनं रामनारायण रेड्डी, ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., ति.ति.दे. के अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री सी.एच.वेंकय्या चौदरी, आई.आर.एस.

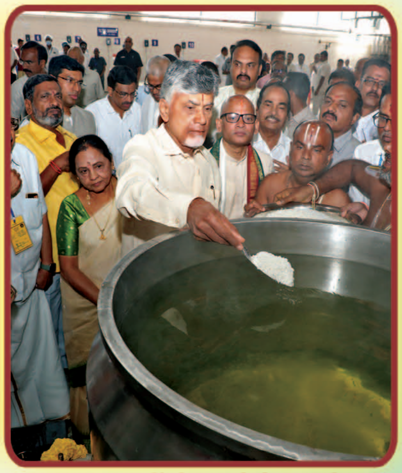

दि. 05-10-2024 को तिरुमल में स्थित वकुलमाता केंद्रीय रसोई घर को प्रारंभित करते हुए आं.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री नारा चंद्रबाबू नायडू जी। इस कार्यक्रम में आं.प्र. के धर्मस्व शाखा के मंत्रीजी श्री आनं रामनारायण रेड्डी, श्री आरणी श्रीनिवास, तिरुपति एम.एल.ए. और ति.ति.दे. के अन्य उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया।

दि. 04-10-2024 को ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित नूतन वर्ष-2025 के कैलेंडर, डैयरी को विमोचन करते हुए आं.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री नारा चंद्रबाबू नायडू जी, आं.प्र.धर्मस्व शाखा के मंत्रीजी श्री आनं रामनारायण रेड्डी और ति.ति.दे. के उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया।

दि. 02-10-2024 को आं.प्र. के माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री कोणिदेला पवन कल्याण जी और श्री आरणी श्रीनिवास, तिरुपति एम.एल.ए., ने तिरुमल श्री बालाजी का दर्शन किया। तदनंतर तिरुमल में स्थित मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा अन्नप्रसाद केंद्र में भोजन करते हुए दृश्य।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-२०)

यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होनेवाला ही है, क्यों कि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है। शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता।

नाना भक्तुलिवि नरुल मार्गमुलु
ये नेपाननैना नातडिय्यकोनु भक्ति ॥नाना॥

हरिकिदि वादिंचुटदि उन्माद भक्ति
परुल गोलुवकुंडुटे पतिव्रता भक्ति
अरसि आत्म गनुटिदिये विज्ञान भक्ति
अरमरचि चोक्कुटे आनंद भक्ति ॥नाना॥

अति साहसाल पूज अदि राक्षस भक्ति
आतनि भक्तुल सेवे अदि तुरीय भक्ति
क्षितिनोक पनिगोरि चेसुटे तामस भक्ति
आतने गतनि उंडुटदि वैराग्य भक्ति ॥नाना॥

अट्टे स्वतंत्रुडौटे अदि राजस भक्ति
नेट्टन शरणनुटे निर्मल भक्ति
गट्टिगा श्री वेंकटेशु कैंकर्यमे चेसि
तट्टु मुट्टु लेनिदे तग निज भक्ति ॥नाना॥

भक्ति के विविध मार्गों में किसी भी मार्ग का अनुसरण कर भगवान को पाना ही जीवन का तात्पर्य है। श्रीहरि का पक्ष लेकर सदैव वाद-प्रतिवाद करना 'उन्माद भक्ति' है (उदा=पेरियाल्वार)। मात्र उनकी ही पूजा करना 'पतिव्रता भक्ति' है (उदा=सभी आल्वार भक्त)। आत्मा को पहचानकर भक्ति भाव रखना 'विज्ञान भक्ति' है (उदा=पोय्गै आल्वार, पूदत्ताल्वार)। भक्ति की परवशता में अपने आपको खो देना 'आनंद भक्ति' है (उदा=नम्माल्वार)। जीवन में अनेकानेक अपराध करके भी सही, धन को संचित कर भगवान को समर्पित करना 'राक्षस भक्ति' है (उदा=तिरुमंगै आल्वार)। भक्तों की सदैव सेवा करना 'तुरीय भक्ति' है (उदा=तिरुमंगै आल्वार)। भगवान से संबंधित किसी विषय पर आसक्त होकर, जीवन काटना 'तामस भक्ति' है (उदा=गोदादेवी)। वैराग्य की भावना का जीवन भर अनुसरण करना 'वैराग्य भक्ति' है (उदा=कुलशेखराल्वार)। अपनी पूजा को ही सर्वश्रेष्ठ मानना 'राजस भक्ति' है। शरणागति को ही सर्वोत्कृष्ट भक्ति मानना 'निर्मल भक्ति' है। अंत में वे कहते हैं कि जीवन को श्री वेंकटेश को समर्पित करना ही अपना मार्ग है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुचानूर

श्री पद्मावती देवी जी का ब्रह्मोत्सव

2024 नवम्बर 27 से दिसंबर 06 तक

दिनांक	वार	दिन	रात
27-11-2024	बुधवार	लक्षकुंकुमार्चन	सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण
28-11-2024	गुरुवार	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	लघुशेषवाहन
29-11-2024	शुक्रवार	महाशेषवाहन	हंसवाहन
30-11-2024	शनिवार	मोतीवितानवाहन	सिंहवाहन
01-12-2024	रविवार	कल्पवृक्षवाहन	हनुमंतवाहन
02-12-2024	सोमवार	पालकी उत्सव - सा.वसंतोत्सव	गजवाहन
03-12-2024	मंगलवार	सर्वभूपालवाहन, स्वर्णरथ	गरुडवाहन
04-12-2024	बुधवार	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
05-12-2024	गुरुवार	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
06-12-2024	शुक्रवार	पालकी तिरुच्चि उत्सव, तीर्थवारी, अवभृथोत्सव, चक्रस्नान, पंचमीतीर्थ।	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-55 नवंबर-2024 अंक-06

विषयसूची

गजलक्ष्मी के रूप में देवी पद्मावती का वैभव	डॉ.रमेश कृष्णा	07
तिरुमल दिव्य क्षेत्र का भव्य इतिहास	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	12
तिरुचानूर ब्रह्मोत्सवों में पद्मावती का वैभव	डॉ.के.सुधाकर राव	18
श्रीनिवास के ब्रह्मोत्सव	डॉ.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	22
श्री शिव पूजा विधान		27
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	31
अवधूत उपाख्यान	श्री ब्रह्मानन्द प्रधान	35
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	37
तिरुमल दर्शन - ति.ति.दे. द्वारा दी जाने वाली एक परेशानी मुक्त, अद्वितीय सुविधा	डॉ.बी.एन.नीलिमा	41
नवंबर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - भगवान के दर्शन	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - 'शाप ही वर है'	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 28		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - श्री पद्मावती देवीजी (मूलमूर्ति), तिरुचानूर।
चौथा कवर पृष्ठ - उभयदेवेरियों सहति श्री करियमाणिक्यस्वामीजी, नगरी (आं.प्र.)।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

भगवती जगज्जननी देवी माँ का ब्रह्मोत्सव

उत्सवम् शब्द का प्रयोग आमतौर पर उपयोग किया जाता है। इसके बारे में सोचने पर वास्तव में पता चलता है कि हमारे पूर्वज कितने लंबे समय तक विश्व कल्याण के बारे में सोचते थे। 'सवम्' शब्द का अर्थ है 'यज्ञ' या 'क्रतु'। किसी एक सर्वोच्च देवता की संतुष्टि के लिए परमात्मा से इह-पर लाभ की आशा से की जाने वाली एक शास्त्रीय गतिविधि कार्यक्रम है। इस चर्या से केवल परिमित प्रयोजन मात्र ही शामिल होता है। 'उत्' जैसा उपसर्गात्मक उपयोग से परिमित अवधी से बाहर आकर बहुल प्रयोजन माने सामाजिक कल्याण का कारण बन जाता है। इसी के अंतर्गत 'रामायण' महाग्रंथ में रामपट्टाभिषेक प्रयत्न को विवरण करते हुए 'उत्सवश्च महाना सीदयोध्यायां जनाकुलः' जैसा वाल्मीकी ने प्रयोग किया।

उत्सवों के द्वारा अग्र प्रयोजन, हमारा अधिष्ठान दैव संतृप्ति मिलती है। भेदभावों का विस्मरण दूसरा प्रयोजन है। उत्सवों के दिन आलय मूर्तियों को जुलूस निकालना एक साधारण विषय है। इस संदर्भ में मंदिर को न जानेवाले भक्तों को भी परमात्मा दिव्य स्वरूप दर्शन के कारण मुक्ति भाव संतृप्ति मिलती है। रथोत्सव कार्यक्रम में अधिक संख्या में भक्तगण भाग लेते हैं। भक्तों का विश्वास है कि तिरुमल श्री बालाजी का ब्रह्मोत्सव में गरुडोत्सव, रथोत्सव... के साथ तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव में गजवाहन सेवा, पंचमीतीर्थ का संदर्शन के द्वारा सर्वसौभाग्य की संपत्ति मिलता है।

तीसरा प्रयोजन आपसी में समझौता है। प्रसिद्ध देवालयों में संपन्न करने वाले उत्सवों में देश के कोन-कोन प्रांतों से भक्तगण पधार कर दर्शन करते हैं। इस संदर्भ में विविध प्रांत के रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार, संस्कृति-संप्रदायों का भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। दूसरी संप्रदाय को समझने के लिए ये उत्सव एक मंच के रूप में खडे होते हैं। यह उत्सव विज्ञान प्रचार केंद्र बन जाता है। शास्त्रीय कार्यक्रम, उत्सवविग्रह का जूलुस निकालना, कोलाट, दांडिया, नृत्य, संगीत, विविध कला श्रेष्ठ सर्वज्ञ अपने प्रदर्शनों के द्वारा ऐहिक, पारलौकिक विज्ञान का प्रदर्शन करने का अवकाश मिलता है।

यह उत्सव पंचमुखैश्वर्यप्रद है। पीढ़ी दर पीढ़ी का आध्यात्मिक शक्ति आगे बढ़ाने के लिए हर एक गाँव का मंदिरों में यह उत्सव चैतन्य प्रारंभ होना चाहिए। उस संदर्भ में ही हर एक मंदिरों में आध्यात्मिकभाव समैक्यता का केंद्र बिंदु बन जाता है। इस संदर्भ में हर साल तिरुमल, तिरुचानूर क्षेत्रों में स्वामीजी और देवी माँ को संपन्न करने वाले ब्रह्मोत्सव ही प्रेरणादायक है।

सर्वमंगलस्वरूपिणी श्री महालक्ष्मी अवतार श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव इस माह में प्रारंभ हो रहे हैं। इस उत्सव में भाग लेकर देवी माँ का दिव्य आशीर्वाद पाने की इच्छा है।

दयलोल तरंगाक्षी पूर्णचंद्र निभानना।
जननी सर्वलोकानां महालक्ष्मीः हरिप्रिया।।

गजलक्ष्मी के रूप में देवी पद्मावती का वैभव

- डॉ.रमेश कृष्णा

श्री महालक्ष्मीदेवी संपत्ति, ऐश्वर्य, समृद्धि, सौभाग्य के साथ-साथ सुख-चैन, ऐश-आराम एवं मानसिक प्रशांतता का भी प्रतीक मानी जाती है। देवी श्री महालक्ष्मी कई रूपों में हम से पूजित होती है जिनमें आदिलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, धैर्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी और धनलक्ष्मी नामक आठ रूप प्रधान माने जाते हैं। इन सब में गजलक्ष्मी का रूप सबसे विलक्षण माना जाता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि देवगज ऐरावत और महालक्ष्मी दोनों का प्रादुर्भाव क्षीरसागर से ही हुआ है। इस प्रकार सगे भाई-बहन होने के कारण एक दूसरे से अधिक गहरा संबंध रखते होंगे। गज कभी माताजी के वाहन के रूप में हो तो कभी माताजी ही गजलक्ष्मी होकर हमें दर्शन देकर आनंद विभोर करती रहती है। ऐसी गजलक्ष्मी की पूजा या उपासना अधिक फलप्रद माना जाता है।

सनातनधर्म में हाथी निष्ठा, शक्ति, प्रज्ञान, वैभव और लंबी उम्र के भी सूचक हैं। हाथी हमारी मानसिक शांति एवं प्रसन्नता के सूचक भी माने जाते हैं। जीवन को स्थिरगति से चलाने में और लंबे जीवन की आशा रखने में हाथी प्रेरणादायक होते हैं। हाथी को प्रत्यक्ष रूप में देखना ही नही बल्कि आखिर सपने में भी उसे देखें तो हमें शुभ ही शुभ होता है। कई पौराणिक गाथाओं के अनुसार यह भी मालूम होता है कि यह सारा भूमंडल चार हाथियों पर खडा है जिन्हें दिग्गज कहते हैं। यानी हमारे आधार का स्तंभ भी हाथी ही हैं।

भारतीयों के इतिहास और संस्कृति में हाथी का विशेष स्थान हमेशा केलिए बरकरार है। ऐसा कोई स्तूप, मंदिर, भवन,

बुर्ज नहीं होगा जिस पर हाथी न हो। हाथियों के ऐश्वर्य का चिह्न मानकर आज भी हाथी की प्रतिमाओं को पुरस्कारों के रूप में देते रहते हैं। 'बृहत् संहिता', 'अर्थशास्त्र', 'मानसोल्लास', 'गजशास्त्र', 'हस्तिआयुर्वेद' आदि कई ग्रंथ हाथियों पर विशेष रूप से लिखे गये हैं जिनके द्वारा यह स्पष्ट होता है कि सनातन भारतीय संस्कृति एवं जीवन शैलियों में हाथी को कैसा महत्वपूर्ण स्थान मिला है।

ऐसे हाथियों में चार प्रकार के हाथी है जिन्हें भद्र, मंद, मृग और संकीर्ण कहते हैं जिन में भद्रजाति के हाथी सब से प्रशस्त माने जाते हैं। गजलक्ष्मी के रूप में देवी श्री महालक्ष्मी की परिकल्पना इसी भद्रजाति के हाथी से की जाती है और विश्वास यह है कि ऐसी गजलक्ष्मी की पूजा करने से हमें वैभव, प्रज्ञान, शक्ति, मानसिक शांति और लंबी उम्र मिल जाएँगे।

श्री महालक्ष्मी देवी और गज का संबंध ऐसा है कि माताजी के उत्सवों का प्रारंभ ही गजपट लहराने से होता है। जिस प्रकार श्री महाविष्णु के ब्रह्मोत्सवों में गरुडध्वज फहराया जाता है उसी प्रकार माता लक्ष्मीदेवीजी के ब्रह्मोत्सवों में गज का ध्वज फहराया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि माताजी के प्रमुख वाहन के रूप में हाथी को प्रधानता दी जाती है।

श्री महालक्ष्मीदेवी निरंतर पद्मों में निवास करने के कारण तिरुचानूर क्षेत्र में माता पद्मावती के नाम से आराधनीय रही है। यहाँ गज से गहरा संबंध स्थापित होने का कारण भी अनोखा है। जब माता पद्मावती वन में विहार कर रही थी तब एक हाथी से वह भयभीत होकर दौडने लगी तो उसी समय हमारे श्रीनिवास प्रभुजी से वह जा मिली। इस प्रकार माता पद्मावती एवं प्रभु वेंकटेश्वरजी के मिलन का कारण होनेवाले हाथी से माता को विशेष प्रेम है। हम सब को भी इस हाथी को लाख-लाख कृताज्ञताएँ प्रकट करना चाहिए क्योंकि इसी हाथी के कारण हम सब के माता-पिता होनेवाले वेंकटेश्वरप्रभु एवं माता पद्मावती एक हुए।

वेदों का अंतर्भाग होनेवाले 'श्रीसूक्त' में माताजी की स्तुति इस प्रकार की गयी है -

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गंभीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।

लक्ष्मीर्दिव्यैः गजेन्द्रैः मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुंभैः
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता।।

पद्मासन में बैठी माताजी के अलौकिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए वेद यह भी बताता है कि कई गजेन्द्र मणिखचित सुवर्णकुभों से माताजी का अभिषेक करते रहते हैं। ऐसी नित्यमंगल महालक्ष्मीजी हमारे घरों में बसी रहे - ऐसी प्रार्थना करते हुए वेद भी माताजी और गजराजों के बीच के सन्निहित संबंधों का वर्णन करता है और यह वेद प्रमाण बताता है कि गजवाहन पर माताजी का दर्शन करने से सभी प्रकार के शुभ हमें होते हैं।

'कनकधारास्तोत्र' मे शंकराचार्यजी भी इसी बात को दुहराते हुए माता की स्तुति करते हैं -

दिग्धस्तिभिः कनक कुंभ मुखावसृष्ट स्वर्वाहिनी विमल
चारुजल प्लुतांगीम्।

प्रातर्नमामि जगतां जननीं अशेष लोकाधिनाथ गृहिणीं
अमृताब्धिपुत्रीम्।।

सभी लोकों की माता होनेवाली, अनंत लोकों के नाथ होनेवाले श्री महाविष्णुजी की पत्नी होनेवाली, क्षीरसागर की पुत्री होनेवाली महालक्ष्मी देवी को मैं सुबह-सुबह नमस्कार कर रहा हूँ। जिसका अभिषेक करने केलिए चारों दिग्गज आकाशगंगा के निर्मल जल को सोने के कलशों में लाते रहते हैं और माता को उनसे स्नान करवाकर वे प्रसन्न होते हैं। इस स्तुति से यह स्पष्ट होता है कि हाथियों को माता पद्मावती से कितना प्रेम है और वैसे ही माताजी को

हाथियों से उतना ही प्रेम है। इसीलिए गजवाहन पर आसीन माताजी की शोभा दुगुना-चौगुना होकर भक्तजनों के हृदयानंद का कारण बना रहता है।

श्री महालक्ष्मीदेवी के अष्टलक्ष्मी रूपों में गजलक्ष्मी के रूप में माताजी विशिष्ट रूप में हमें दिव्यदर्शन प्रदान करती है जिसका भव्य वर्णन करते हुए महापंडित मधुसूदनसरस्वती प्रार्थना करते हैं -

जय जय दुर्गति नाशिनि कामिनि सर्वफलप्रद शास्त्रमये
रथगजतुरग पदाति समावृत परिजन मंडित लोकनुते।
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित तापनिवारण पादयुते
जय जय हे मधुसूदनकामिनि गजलक्ष्मि रूपेण पालय माम्।।

गजलक्ष्मी के रूप में माताजी का दर्शन करने से हमारे सब प्रकार के दारिद्र्य दूर हो जाते हैं। हम जो भी इच्छा करते हैं वे सब पूरे हो जाते हैं। सभी शास्त्र एवं धर्म यही कहते हैं कि ऐसी माता ही सभी लोकों की माता हो सकती है। रथ, गज, अश्व और पद नामक चार प्रकार की सेनाओं के साथ विराजमान इस माता की स्तुति करने केलिए सभी लोक खड़े हुए हैं। ब्रह्म, विष्णु, शिव जैसे सभी देवता इसी माता की पादसेवा करके अपनी इच्छाएँ पूरा करते हैं। हमारी प्रार्थना यह है कि ऐसी माता गजलक्ष्मी के रूप में हम सब पर अपनी कृपादृष्टि बरसाते रहे।

महाकवि जगन्नाथ पंडितरायजी 'लक्ष्मी लहरि स्तोत्र' में माताजी का वर्णन करते हुए कहते हैं -

विलग्नौ ते पार्श्वद्वय परिसरे मत्तकरिणौ करोन्नीतैरंचन्
मणिकलश मुग्धाश्चगळितैः।
निषिंचंत्वौ मुक्तामणिगणजयैः त्वा जलकणैः नमस्यामो
दामोदर गृहिणी दारिद्र्यदलिता।।

'श्री महाविष्णु की पत्नी होनेवाली हे लक्ष्मीदेवी! तुम्हारे दोनों ओर खड़े होकर दो मत्तगज अपने रत्नखचित सुवर्णकुंभों से भरे अपने मुखों से निकल रहे असली मोतियों के जैसे पानी की बूँदों से तुम्हारा अभिषेक कर रहे हैं। इस प्रकार मत्तगजों से युक्त तुम्हारा दर्शन करने मात्र से हमारी दरिद्रता आसानी से दूर हो जाती है। ऐसे तुम्हें मैं नमस्कार कर रहा हूँ।' इस प्रार्थना से भी यह स्पष्ट होता है कि हाथी पर आसीन माताजी का दर्शन करने से हमारी दरिद्रता दूर होकर सुख-चैन से एवं अष्टैश्वर्यों से हमारा जीवन भर जाता है।

माताजी से हम सब यही प्रार्थना करें कि हे माता! आप हमारे मन को ही अपना निवासस्थान बना लो। महाकवि पराशर भट्टरजी माताजी की प्रार्थना करते हुए कहते हैं-

अंभोरुहं जन्मगृहं भवत्याः वक्षस्थलं भर्तृगृहं मुरारेः।
कारुण्यतः कल्पय पद्मवासे, लीलागृहं मे हृदयारविंदम्।।

माताजी का जन्मस्थान कमल है और रहने का स्थान अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायक श्रीनिवास प्रभुजी का वक्षःस्थल यानी छाती है। फिर भी माताजी अपनी दया के कारण हम सब के मनों को अपना लीलास्थान बनाकर हमारे मनों में

दिसंबर 2024

02 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का गजवाहन सेवा
06 पंचमीतीर्थ
07 सुब्रह्मण्य षष्ठी,
तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पुष्पयाग
11 श्री गीताजयंती
12 श्री चक्र तीर्थमुक्कोटी
13 हनुमद् व्रत, तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का कृत्तिका दीपोत्सव
14 श्री दत्तजयंती
15 श्री कपिल तीर्थमुक्कोटी
16 धनुर्मास आरंभ

रहना ही पसंद करती है। तो क्यों न हम माता को अपने मनों में शाश्वत स्थान न दें? ऐसी कृपा हम पर और कौन दिखायेगा सिर्फ माताजी के अलावा?

'पद्मावती नवरत्नमालिका स्तोत्र' में श्रीशेषशर्मा कवि माताजी से प्रार्थना करते हैं-

आकाशाधीशपुत्रीं श्रितजन निवहाधीन चेतः प्रवृत्तिम्

वंदे श्रीवेंकटेश प्रभुवर महिषीं दीनचित्त प्रतोषाम्।

पुष्यत् पादारविंद प्रसृमर सुमहश्शामित स्वाश्रितांतः

तामिस्रां तत्वरूपां शुकपुरनिलयां सर्वसौभाग्यदात्रीम्।।

माता पद्मावती आकाशराजा नामक राजा की बेटी के रूप में इस लोक में प्रादुर्भूत हुई और प्रभु वेंकटेश्वरजी की पत्नी बनी और भक्तों की इच्छाओं के अनुरूप यहाँ तिरुचानूर में आकर बसी। इसी तिरुचानूर का पूर्वनाम ही शुकपुरी है क्योंकि यह क्षेत्र एक जमाने में महायोगी शुक महर्षि की तपोस्थली है। द्रविड भाषा में गौरवसूचक 'श्री' शब्द को 'तिरु' कहते हैं और गाँव को 'वूरु' कहते हैं। इस प्रकार श्री शुक महर्षि की तपोभूमि होनेवाली इस जगह को 'तिरुशुकनूर' कहा करते थे जो कालांतर में 'तिरुचानूर' हो गया है। और एक प्रचलित गाथा के अनुसार 'तिरु' का अर्थ है अत्यंत सुंदर और 'चाना' का अर्थ है सुंदरी यानी लोकोत्तर सौंदर्यवाली माता पद्मावती के रहने का स्थान होने के कारण इस प्रांत का नाम तिरुचानूर हो गया है।

महापंडित एवं महाभक्त यामुनाचार्य माताजी की अनंत महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं -

यस्यास्ते महिमानं आत्मनैव त्वत् वल्लभोपि प्रभुः

नालं मातुं इयत्तया निरवधिं नित्यानुकूलं स्वतः।

तां त्वां दास इति प्रपन्न इति च स्तोष्यामि अहं निर्भयो

लोकैकेश्वरि! लोकनाथ दयिते! दांते दयां ते विदन्।।

हे माता! तुम्हारी अनंत, सहज एवं प्रिय प्रभाव को पूरी तरह न जान सकने के कारण तुम्हारे सर्वसमर्थ पति जी भी तुम्हारे प्रभाव के बारे में बोलने का प्रयत्न भी नहीं कर रहे हैं तो ऐसी स्थिति में मैं निर्भीक होकर तुम्हारी स्तुति कर रहा हूँ तो इसका एकमात्र कारण तुम्हारी दया मुझ पर पूरी तरह होना ही है और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम मुझ पर दया ही दिखाओगी। इसीलिए मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ।

कूरत्ताल्वान् नामक महाभक्त 'श्रीस्तव' नामक स्तोत्र में माता की महिमा के बारे में कहते हैं - सो अंगवेद यदि वा न वेद - यानी अपनी महिमा को भगवान भी स्वयं नहीं जान सकता तो हम जैसे अल्पज्ञ उसे कैसे जान सकते हैं। इसी प्रकार माता की महिमा को आखिर माताजी भी पूरी तरह नहीं जान सकती। इसलिए वे कहते हैं - यानी तुम्हारी महिमा को न तुम जानती हो और न तुम्हारे पति भी।

हर साल 'कार्तिक ब्रह्मोत्सव' के नाम से श्री महालक्ष्मीदेवी के अपरावतार होनेवाली माता पद्मावतीदेवी के भव्य उत्सव अत्यन्त वैभव से संपन्न होते हैं। उन उत्सवों में प्रधान आकर्षण होता है माताजी गजवाहन सेवा और पद्मसरोवर में होनेवाला पंचमीतीर्थ। इन उत्सवों में भाग लेने केलिए देश-विदेशों से लाखों में यात्री तिरुचानूर पहुँचते हैं और यहाँ का तिरुमल तिरुपति देवस्थान उनके लिए आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराता रहता है। ऐसे

समय में माताजी का दर्शन करना हमारे पूर्वजन्मों का अहोभाग्य ही माना जाता है।

जय माता पद्मावती! जय जय अलर्मेल्मंगा! जय जय जय माता लक्ष्मी!

पद्मसरोवर की महिमा

एक प्रसिद्ध पौराणिक गाथा के अनुसार जब भृगु महर्षि वैकुंठ पहुँचे तब श्री महाविष्णुजी किसी सोच-विचार में थे और उन्होंने महर्षि के आगमन का ख्याल नहीं रखा जिस से महर्षि क्रोधित हुए और अपने पॉव से उनके वक्षःस्थल पर मारा। तब जाकर श्री महाविष्णु ने महर्षि को देखा और अपनी गलती पर पश्चात्ताप प्रकट करने हुए महर्षि के पॉव दबाये। लेकिन महाविष्णु के वक्षःस्थल पर रहनेवाली नित्यानपायिनी महालक्ष्मीदेवी इस से क्रोधित हुई और श्रीवैकुंठ से चली गयी। वे वहाँ से कपिल महर्षि के आश्रम में पहुँची और वहाँ से कोल्हापुर पहुँची। वहाँ महाविष्णुजी ने लक्ष्मीदेवी केलिए बारह साल घोर तप किया। तब जाकर माता लक्ष्मीदेवी कोल्हापुर से तिरुचानूर के पद्मसरोवर में पद्मावती के रूप में प्रादुर्भूत हुई। उस समय महालक्ष्मी का स्वागत करते हुए गजराजों ने अपने सूँडों के जल से महालक्ष्मी का अभिषेक किया। इस प्रकार माताजी का पुनराविर्भाव होने के अत्यंत महामहिमान्वित क्षेत्र के रूप में तिरुचानूर और पद्मसरोवर प्रसिद्ध हुए।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

(गतांक से)

तिरुमल दिव्य क्षेत्र का भव्य इतिहास

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

पंचबेर
(आलय के देवता)

भगवान महाविष्णु का अवतार श्री वेंकटेश्वर मंदिर का प्रधान देवता है। यह स्वयंभू(अपने आप जन्मित) है।

वैखानस आगमों के अनुसार, वेंकटेश्वर का प्रातिनिध्य-पाँच देवताओं (बेरमों) के रूप में होता है। इन्हें मूल-विराट के साथ ''पंचबेरमुलु'' (पाँच बेरम्-देवतालोग) कहा जाता है। पाँचों देवता - 'ध्रुवबेरम् (मूल-विराट)', 'कौतुकबेरम्', 'स्नपनबेरम्', 'उत्सवबेरम्', 'बलिबेरम्' इन सब बेरों को आनंदनिलय के विमान के नीचे गर्भालय में रखा गया है।

1) मूल-विराट या ध्रुवबेरम् : गर्भालय के बीच आनंदनिलय विमान के नीचे, वेंकटेश्वर की मूर्ति कमल पर खड़ी भंगिमा में चार हाथों के साथ, दोनों हाथों में शंख और चक्र का धारण कर, एक वरद और एक कटि-भंगिमा में होती है। यह देवता मंदिर का प्रधान देवता के रूप में परिगणित किया जाता है। यह वज्र-किरीट, मकर कुंडल, नागाभरण, मकर कांति, सालिग्राम हार, लक्ष्मीहार आदि आभूषणों से अलंकृत होता है। वेंकटेश्वर की पत्नी लक्ष्मी देवी ''व्यूह-लक्ष्मी'' के रूप में मूल-विराट के वक्षःस्थल पर विराजमान होती है।

2) भोग श्रीनिवास या कौतुकबेरम् : यह एक फुट (0.3 मी.) परिमाण वाला चाँदी की मूर्ति है, जिसे सन् 614 में पल्लव रानी सामवाय ने त्योहारों के निर्वहण-समय उपयोगार्थ आलय में दिया था। भोगश्रीनिवास का विग्रह हर हमेशा मूलविराट के वामपाद के पास रखा जाता है। सदा पवित्र-संबन्ध ''क्रूच'' के साथ प्रधान देवता के साथ अनुसंधानित होकर रहता है। यह देवता मूलविराट की तरफ से अनेक रोजवारी सेवाओं को पाते रहने से इसे ''भोगश्रीनिवास मूर्ति'' कहते हैं। इस देवता की हर रोज एकांत-सेवा और बुधवार के दिन सहस्रकलशाभिषेक सेवा निर्वहित होती हैं।

3) उग्र श्रीनिवास या स्नपनबेरम् : यह देवता श्री वेंकटेश्वर में हुई भयंकर अंश मात्र को सूचित करता है। सन् 1330 तक इस देवता को प्रधान जुलूस में उपयोगित करते रहे। उग्र श्रीनिवास गर्भालय में ही रहते हुए, साल में एक बार यानी ''कैशिक द्वादशी'' पर सूर्योदय से पहले मात्र जुलूस में आता है! यह देवता मूल-विराट की तरफ से रोजाना अभिषेक पाता है। संस्कृत में 'स्नपन' शब्द का 'प्रक्षालन' अर्थ है। अभिषेक के कारण यह देवता 'स्नपनबेरम्' नाम पाया है!!

4) मलयप्पस्वामी या उत्सवबेरम् : मलयप्पा आलय का जुलूस का देवता है (उत्सवबेरम्)। यह स्वामी सदा अपनी पत्नियों-श्रीदेवी, भूदेवी देवताओं के साथ रहता है। यह स्वामी ब्रह्मोत्सव, कल्याणोत्सव, डोलोत्सव, वसंतोत्सव, सहस्रदीपालंकरण सेवा, पद्मावती परिणयोत्सव, पुष्पपालकी, आणिवर आस्थानम्, उगादि आस्थानम् आदि सभी पर्वों के दिनों में पूजा पाया जाता है।

5) कोलुवुश्रीनिवास या बलिबेरम् : कोलुवुश्रीनिवास बलिबेरम् को सूचित करता है। ''कोलुवुश्रीनिवास (दरबारी श्रीनिवास)'' मंदिर के व्यवहारों के सम्मेलन या सभा के अध्यक्ष बने रहने का संरक्षक देवता के रूप में परिगणित किया जाता है। रोजवारी दरबारी सेवा अथवा सभा सुबह संपन्न होती है। इस संदर्भ में - पिछले दिन के समर्पण, आमदनी, खर्चे इस देवता को ज्ञात कराये जाते हैं। खाताओं के प्रदर्शन से उस दिन का पंचांग-श्रवण होगा।

अन्य मूर्तियाँ

पंचबेरों के साथ गर्भालय में सीता, राम, लक्ष्मण, रुक्मिणी, श्रीकृष्ण, सुदर्शन चक्र आदि मूर्तियाँ हैं। ये पंचलोह विग्रह हैं। इस आलय के प्रांगण में गरुड़, नारसिंह, वरदराज, कुबेर, हनुमानजी के मंदिर हैं। अनंत, गरुड़, विष्वक्सेन, सुग्रीवादि देवताओं की मूर्तियों के साथ-साथ भगवद्रामानुज आचार्यजी की भी मूर्तियाँ हैं।

आनंदनिलय के विमान की द्वितीय श्रेणी के वायुव्य कोने में शिल्पित श्री वेंकटेश्वर ''विमान वेंकटेश्वर'' कहलाया जाता है! यह मूर्ति गर्भालय में प्रतिष्ठित विग्रह का सरासर प्रतिरूप है!

तिरुमल श्री वेंकटेश्वर के पूजा-विशेष (वैखानस आगम)

ऋषि ''विखनस'' के प्रतिपादित और उसके शिष्य अत्रि, भृगु, मरीचि, कश्यप के द्वारा आचरित ''वैखानस आगम आराधना'' विधान व संप्रदाय का यह मंदिर अनुसरित करता है। हिन्दू-धर्म के प्रधान संप्रदायों में एक यह पूजा-विधान, प्रधानतया विष्णु तथा उसके अनुबन्धित अवतारों को परम-दैव के तौर पर आराधना करता है!

वैखानस-आगम के अनुसार विष्णु भगवान को दिन में छः बार पूजा जाता है। आराधना की जाती है। इनमें सरासर एक पूजा तो अनिवार्य है, जिस पूजा-विधान को आगम-परिभाषा में ''षट्काल पूजा'' बताया जाता है जो (1)प्रत्यूष, (2)प्रातःकाल, (3)मध्याह्न, (4)अपराह्न, (5)सायंकाल, (6)रात्रिपूजा हैं।

सेवाओं को - (1)रोजवारी, (2)साप्ताहिक, (3)आवर्तित (बार-बार होनेवाली) बना कर वर्गीकृत कर दिया गया है।

मंदिर में रोजवारी सेवाओं में (संभवित क्रम में) सुप्रभात सेवा, तोमालसेवा, अर्चना, कल्याणोत्सव, डोलोत्सव(ऊँजल सेवा), आर्जित ब्रह्मोत्सव, आर्जित वसंतोत्सव, सहस्रदीपालंकरण, एकांत-सेवा सम्मिलित हैं!

आलय की साप्ताहिक सेवाओं में सोमवार-विशेष पूजा, मंगलवार-अष्टदल पादपद्माराधना, बुधवार-सहस्र कलशाभिषेक, बृहस्पतिवार-निज-पाददर्शन, नेत्र-दर्शन, तिरुप्पावड़ा, पूलंगी सेवा विद्यमान हैं! शनिवार और रविवारों में साप्ताहिक सेवाएँ नदारद हैं।

आवर्तन सेवाओं में - ज्येष्ठाभिषेक, आणिवर आस्थान, पवित्रोत्सव, कोइल आल्वार तिरुमंजनम् आदि कैंकर्य हैं!

श्रीस्वामी का नैवेद्य

तिरुमल में श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का प्रसाद ''लड्डू'' दिया जाता है, जो 'तिरुपति लड्डू' नाम से पूरी दुनिया-भर में मशहूर है!!

तिरुपति-लड्डू को ''भौगोलिक सूची'' की पहचान प्राप्त है! इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थान को यह प्रतिष्ठा उपलब्ध हुई है कि संसार-भर में मात्र यह

संस्था ही तिरुपति-लड्डू बना सकता है और प्रसाद के रूप में विक्रय कर सकता है!!

लड्डू के साथ-साथ अन्य अनेक अनन्य प्रसाद श्री वेंकटेश्वर को अर्पित किया जाता है, जिन्हें अन्न-प्रसाद और पण्यारों में विभाजित कर दिया है!!

अन्न-प्रसादों में चक्केरा-पोंगली (मीठा), पुलिहोरा, मिरियाल पोंगली, कदंबम्, दध्योजनम् हैं! पण्यारों में लड्डू, बड़ा, दोसे, अप्पम्, जिलेबी, मुरुकु, बोब्बट्टु, पायासम् विद्यमान हैं।

यात्रियों को प्रतिदिन मुफ्त में, बिना शुल्क के सलक्षण भोजन खिलाया जाता है!!

और, गुरुवारों में ''तिरुप्पावड़ा-सेवा'' संपन्न होती है!

इस सेवा के अंतर्गत 'तिरुमामणि-मंडप'' में (घंटा-मंडप) ''पुलिहोरा'' को बड़े 'पहाड' के आकार में राशि बनाकर श्रीस्वामी को समर्पित किया जाता है!! इस कैंकर्य के अंदर पुलिहोरा बनाने में 484 किलोग्राम श्रेष्ठ चावल का उपयोग करते हैं!!

श्रीस्वामी का दर्शन!

साधारण दिवसों में रोजाना 50,000 से लेकर 1,00,000 तक के भक्तजन श्री वेंकटेश्वर भगवान के दर्शन करते रहने के बाद, ब्रह्मोत्सव-जैसे विशेष संदर्भों में,

पर्व के दिनों में 5,00,000 लोग श्रीस्वामी के दर्शन में शरीक हो रहे हैं!!

यह है श्रीस्वामी की प्रभा!!!

अतएव, यह दर्शन का प्रमाण विश्वभर में अत्यंत अधिकाधिक भक्तों के दर्शनीय पवित्र स्थान के तौर पर रिकॉर्ड़ पाया हुआ है!! भारी मात्रा में तिरुमल में आते हुए भक्तजनों को नियंत्रित-हेतु तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने तिरुमल में दो 'आराम मंडपों' का निर्माण कर दिया है - वैकुंठम क्यू-काप्लेक्स-1 और वैकुंठम क्यू-काप्लेक्स-2. इन मंडपों का सन् 1983 और 2000 वत्सरों में बनाया गया है।

दर्शन के सांप्रदाय के अनुसार भक्तलोग प्रधान आलय में श्री वेंकटेश्वर के दर्शन से पहले-पहल, स्वामी की 'पुष्करिणी' के पश्चिमी तट पर स्थित 'श्री भू-वराह स्वामी' के मंदिर का संदर्शन करना आवश्यक है। आज ही में, पादचारी यात्रियों के लिए अलग से 'क्यू-लॉईन' का प्रवेश बना दिया हुआ है। इस विशेष क्यूलॉईन में प्रवेश के लिए उचित तथा परिमित संख्या में 'बयोमेट्रिक टोकनें' जारी कर दी जाती हैं!! टोकने 'पहले आये को पहले सेवा' करने का आधार के रूप में मंजूर किये जाते हैं। भक्तलोग अपने को निर्देशित समयों में श्री वेंकटेश्वर का दर्शन पा सकते हैं।

केश समर्पण (तलनीलालु)

तला : शिर, नीलालु : शिर पर हुए नीले-नीले केश, 'तल-नीलालु का समर्पण' का मतलब है - शिर पर हुए नीले-नीले सुंदर केशों का, भगवान श्री वेंकटेश्वर को समर्पित करना होता है।

असंख्याक भक्तलोग भगवान को अपने केशों को समर्पित करते हैं। इसे एक 'मिन्नत' मानते हैं।

इस संदर्भ में अपने पुराणों में एक गाथा कल्पित है- ''श्री वेंकटेश्वर सिर पर राजा आकाश के 'गो-संरक्षक' ने जब अपनी कुल्हाड़ी से वार किया, तो सो लग कर श्रीस्वामीजी के सिर पर चोट आयी, जिसकी वजह से आगे चलकर स्वामीजी के सिर पर वहाँ बाल नहीं उग सके जहाँ चोट लग गयी थी!

इस प्रकार स्वामीजी के गल्जेपन से व्याकुल नीलादेवी, जो गन्धर्व-युवरानी थी अपने सिर से कुछ केश निकाल कर स्वामी के गंजे सिर पर लगा दिया! - अपके मायाजाल से! केश स्त्रियों की सुन्दरता का प्रतिरूप है और सुन्दर अमानत है। नीलादेवी के त्यागगुण पहचान कर श्रीनिवास भगवान ने एक आदेश जारी किया कि आयिंदा तिरुमल-पहाड़ पर पधारते यात्री अपने विनील केश अपने को समर्पित कर देंगे, जिन्हें त्यागमयी नीलादेवी स्वीकृत करेगी। इसी सिलसिले में श्रीनिवास भगवान का आवासस्थल तिरुमल 'नीलाद्रि' नाम से भी पुकारे जाने लगी। तिरुमल पहाड़ पर 'कल्याणकट्टा' नामक केश समर्पण केंद्र में शिरोमुंडन करवा सकते हैं। अपनी मनौती पूरी होने के बाद भक्ति-भाव से केश समर्पण कर भगवान जी का दर्शन कर सकते हैं।

'भगवान की हुण्डी'

स्थलपुराण के अनुसार, श्रीनिवास ने अपनी प्रियसखी पद्मावती जी से परिणयोत्सव के खर्चे के लिए, धन के देवता कुबेर से 'एक करोड़ चौदह लाख' सोने की

मुद्राओं का ऋण लेकर, देवशिल्पी ''विश्व-कर्म'' से अनुरोध किया था कि शेषाचल पर ''वैकुंठ धाम'' के सृजन करने का आदेश दिया था। श्रीस्वामी ने कुबेर से वादा किया था कि उसका कर्जा भक्तों के हुण्डी में अपनी सेवा में डालने वाले धन से चुकायेगा। आजकल भक्तों-द्वारा हुण्डी में डालते हुए धन, मूल्यवान् आभूषणों की कीमत रोजाना 2-3 करोड़ की वादाद में होती है!!

'श्रीस्वामी के त्योहार'

तिरुमल श्री वेंकटेश्वर का मंदिर त्योहारों का स्वर्गधाम है। यहाँ साल-भर में 365 दिनों में 433 उत्सव मनाये जाने की प्रथा है। इसी कारणवश, तिरुमल दिव्य-धाम में ''नित्यकल्याणम-पच्चतोरणम्!'' (नित-नित कल्याण सदा हरातोरण!) वाला नाम पड़ गया है। अतः तिरुमल में हर रोज उत्सव, हर रोज पर्व मनाते ही जाते हैं!!

'तिरुमल-नायक के उत्सव'

तिरुमल-श्री वैकुंठधाम में नित-नित कल्याण-सदा हरातोरण होता है, जहाँ हर रोज कोई न कोई पर्व या उत्सव मनाये जाते हैं! हर वर्ष अक्तूबर महीने में मनाये जाने वाले कार्यक्रम ''श्री वेंकटेश्वर के ब्रह्मोत्सवों'' की कार्य-विधि नौ दिनों का एक प्रधान उत्सव है, जिस में मलयप्पस्वामी अपनी दोनों देवेरियों के साथ लेकर मंदिर की चार माड़ावीथियों में अत्यंत कोलाहलपूर्ण ढंग से विचरते हैं! श्री स्वामी के ब्रह्मोत्सवों में ''वाहन-सेवाएँ'' प्रमुख हैं। वाहनों में ध्वजारोहण के पश्चात्-महाशेषवाहन, लघुशेषवाहन, हंसवाहन, सिंहवाहन, मोती-छतवाहन, कल्पवृक्षवाहन, सर्वभूपाल वाहन, मोहिनी अवतार, गरुड़वाहन, हनुमंतवाहन, स्वर्णरथ, अश्ववाहन! चक्रस्नान ब्रह्मोत्सवों में आखिरी क्रिया-उत्सव है। वैकुंठ एकादशी पावन पर्वदिन के उपलक्ष में स्वर्णरथोत्सव में लाखों भक्तों से दरसाया जाता है। उस दिन गर्भालय से सटे ''वैकुंठ-द्वार'' के जरिये अत्यंत शोभायमान वेंकटेश भगवान का दर्शन लोग पाकर तन्मय हो जाते हैं!

फरवरी में मनाये जाने वाले ''रथ-सप्तमी'' पर्व दिन पर मलयप्पस्वामी का पुरोत्सव सात अलग-अलग वाहनों में प्रातःकाल से लेकर आधी रात तक चलता है! इतर वार्षिक उत्सवों में - श्रीरामनवमी, जन्माष्टमी, उगादि, प्लवोत्सव, श्री पद्मावती-परिणयोत्सव, पुष्प-याग, पुहुप-पालकी और अप्रैल माह में मनाये जानेवाला ''बसंतोत्सव'' अत्यंत प्रभावी तथा प्रधान उत्सव हैं!!

गीत और स्तोत्र

तिरुमल मंदिर के गर्भालय में 'शयन-मंडप' में श्री वेंकटेश्वर बालाजी के लिए उदय काल में सर्व प्रथम की जानेवाली सेवा है ''श्री वेंकटेश्वर सुप्रभातम्!!'' सुप्रभात का मतलब है, 'भगवान की जगाना!' श्री वेंकटेश्वर का

सुप्रभात-गीत का पठन मंदिर के गर्भालय में ''बंगारु वाकिलि (सोने का कपाट)'' में सोलह खंभों वाले ''तिरुमामणि मंडप'' में किया जाता है। सुप्रभात गीत के पठनानंतर भोगश्रीनिवासजी को गर्भालय में ले जाते हैं। सन् 1430 में विजयनगर के राजा श्री वीरप्रतापराजजी महराज के हयाम में मंदिर में वेदपठन के साथ-साथ ''सुप्रभात-पठन'' का भी आरंभ कर दिया गया था!! तब से लेकर आज तक अविच्छिन्न ढंग से यह प्रथा चलती आ रही है!!

भगवान श्रीनिवासमूर्तिजी के इस प्रसिद्ध सुप्रभात-गीत की रचना ''प्रतिवाद भयंकर अण्णंगराचार्य जी'' ने किया था! अण्णंगराचार्यजी शा.श.1361 में कांचीपुरम् में पैदा हुए। इनके माता-पिता आंडाल एवं अनंताचार्यजी थे! अण्णंगराचार्य श्री रामानुजाचार्य के द्वारा नियमित 74 के सिंहासनाधिपतियों में एक ''श्रीमुडुंबनंबि'' के वंशज हैं जिसके गुरु ''मणवाल महामुनि'' हैं!! श्री वेंकटेश्वर के महाभक्त तथा महान् तेलुगु-भाषी कवि और ''पदकविता-पितामह'' नाम से विख्यात ''ताल्लपाका अन्नमाचार्य'' ने (अन्नमय्या) श्री वेंकटेश्वर के कीर्त्तन में लगभग 32,000 पदों की संरचना की थी! अन्नमाचार्य के पद व कीर्त्तन तेलुगु तथा संस्कृत भाषाओं में लिखित हैं। इन्हें तेलुगु-भाषी ''संकीर्त्तन'' कह कर आदर के साथ पुकारते हैं! इन्हें श्रृंगार संकीर्त्तन तथा आध्यात्म संकीर्त्तन के नामों से वर्गीकृत किया गया है!! अन्नमय्या ने अपने संकीर्त्तनों में श्री वेंकटेश्वर का अवतार-वैभव प्रकटित किया है। अन्नमाचार्य के संकीर्त्तनों में प्रभु श्री वेंकटेश विशद रूप में प्रकटित हो पाया है। पहली बार, अन्नमय्या ने प्रकटित किया है कि यह श्री वेंकटाचल-भूपति साक्षात् वैकुंठनाथ है, जो एक पाद से कल्लोल कलियुग का भक्तों के संरक्षणार्थ धर्म-देवता की सहायता-हेतु साक्षात वैकुंठधाम को तिरुमल-गिरियों पर उतारे, ब्रह्म, इन्द्र, दिक्पालादि समस्त देवगण के साथ कलियुग का निरीक्षण कर रहे हैं!! आज से एक हजार साल पहले श्रीरंगम के निवासी आचार्य श्री रामानुजजी महराज ने 11वीं सदी में यह घोषणा की थी, जिसे चार सौ सालों के उपरान्त अन्नमय्या ने दृढ़ रूप से अपने पदों में परिपुष्ट किया था!! अन्नमाचार्यजी का जन्म मई-1408 में आज के आन्ध्रराज्य के कड़पाजिले में ''ताल्लपाका'' नामक गाँव में ब्राह्मण-वंश में हुआ था, जिन के माता-पिता लक्कमाँबा और नारायणसूरि थे!

क्रमशः

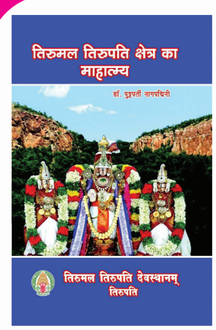

तिरुमल श्री बालाजी का ब्रह्मोत्सव के अवसर पर ति.ति.दे. द्वारा प्रकाशित ग्रंथ का विवरण

ग्रंथ का नाम - तिरुमल तिरुपति क्षेत्र का माहात्म्य

लेखक - डॉ.पुट्टपर्ती नागपद्मिनी

भाषा - हिन्दी

साइज - 1/8 डेम्मी

दाम - रु.75/-.

अन्य विवरण के लिए - ति.ति.दे. प्रकाशनों का बिक्री केंद्र, ति.ति.दे. प्रेस काम्पौंड, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 501. दूरभाष-0877-2264209.

तिरुचानूर ब्रह्मोत्सवों में पद्मावती का वैभव

- डॉ. के सुधाकर राव

महालक्ष्मी का ही एक स्वरूप पद्मावती है। यह देवी तिरुचानूर में विराजमान है। मन्दिर के समीपस्थ पद्मसरोवर से पद्मावती देवी का आविर्भाव हुआ। देवी यहाँ पर सहस्रकमलदलों के आसन पर विराजमान है। इस देवी के ब्रह्मोत्सव कार्तिक माह के नवंबर 27 से आरंभ होकर दिसंबर 6 तक चलेंगे।

श्री पद्मावती देवी साक्षात् श्री महालक्ष्मी मानकर पूजा करते हैं। स्थानीय भाषा में देवी को 'अलमेलुमंगा' भी कहते हैं। भक्तगणों के मनोरथों को सफल बनाने वाली पद्मावती जीवन में वैभव प्रदान करती है। सुख एवं समृद्धि प्रदान करती है।

वेदान्तदेशिक के दयाशतकम् के मुताबिक पद्मावती देवी ज्ञानरूपी क्षीर को सबको वितरित करती है। वेदान्तदेशिक ने अपनी श्रीस्तुति में पद्मावती को महालक्ष्मी के रूप में वर्णित किया है। उनके सकल सद्गुणों का वर्णन इस स्तुति में उपलब्ध है। श्रीमान् शंकराचार्य ने अपने कनकधारास्तोत्र में महालक्ष्मी का चेतोहारी वर्णन किया है। विशिष्टाद्वैत परंपरा के प्रवर्तक श्री रामानुजाचार्य ने अपने शरणागति गद्य में देवी का वर्णन भक्तिपूर्वक किया है।

श्री पराशर भट्टर ने अपने 'श्री गुणरत्नकोश' में पद्मावती के उदार गुणों का, वैभव का वर्णन किया है। पद्मावती को अष्टलक्ष्मी स्वरूप माना गया है। अष्टलक्ष्मी के स्वरूप कुछ इस प्रकार है।

अष्टलक्ष्मी

1. आदिलक्ष्मी, 2. धनलक्ष्मी, 3. धान्यलक्ष्मी, 4. गजलक्ष्मी, 5. संतानलक्ष्मी, 6. धैर्यलक्ष्मी, 7. विजयलक्ष्मी, 8. विद्यालक्ष्मी।

आदिलक्ष्मी आत्मज्ञान प्रदान करती है। ध्यानस्थिति के माध्यम से आध्यात्मिक वैभव को प्रदान करती है।

धनलक्ष्मी अपार धन संपत्ति से भक्तों को संतुष्ट बनाती है। अभयमुद्रा से दारिद्र्य भय को समाप्त करती है।

धनलक्ष्मी धन प्रदान करने वाली हैं। धन के बगैर कोई भी काम इस दुनियां में संभव नहीं है। द्रव्य को अभाव में जीवन दुर्भर बन जाता है। पद्मावती अपार धन प्रदान करने के माध्यम से भक्तों की रक्षा करते है।

धान्यलक्ष्मी खेतीबाड़ी के माध्यम से धान्य समृद्धि प्रदान करती है। धान्य की समृद्धि से जीवन में कष्टों को समाप्त करती है।

गजलक्ष्मी हमें पशुओं की संख्या को वृद्धि कराती है। समुद्रमंथन के समय इन्द्र के नष्ट वैभव को पुनरुज्जीवित किया था गजलक्ष्मी ने।

संतानलक्ष्मी के गोद में संतान को देख सकते हैं। यह लक्ष्मी लोगों को संतान प्रदान करने में सक्षम है। पुत्र या कन्या की उत्पत्ति से परिवार में एक आनंदमय वातावरण पैदा होता है। संतानलक्ष्मी के कृपा के बगैर यह संभव नहीं है।

धैर्यलक्ष्मी जीवन के संग्राम में धैर्य प्रदान करती है। कष्टों को पारकर सुख समृद्धि को प्राप्त करने में भक्तों की सहायता करती है।

विजयलक्ष्मी हमारे जीवन में विजय प्रदान करती है। व्यापार में, मुकद्दमों में परीक्षाओं में उत्तीर्णता प्राप्त करना विजयलक्ष्मी की कृपा के बिना संभव नहीं है।

विद्यालक्ष्मी ज्ञान प्रदान करती है। 'ज्ञानादेव तु कैवल्यम्' कहा गया है। ज्ञान से जीवन में आध्यात्मिक उपलब्धि की प्राप्ति होती है।

यद्यपि पद्मावती एक ही है, तथापि विभिन्न वरों को प्रदान करने हेतु विभिन्नरूपों में विराजमान हो रही है।

कार्तिक माह के ब्रह्मोत्सवों के वैभव के बारे में वर्णन करना आदिशेष के लिए भी असंभव है। इस महोत्सवों के दौरान माँ पद्मावती विभिन्न वाहनों पर विराजमान होकर भक्तों को दर्शन प्रदान करती है। इन उत्सवों में उपस्थित होने मात्र से ही भक्त अपने मनोरथों को सफल बना सकते हैं। वाहनों में गजवाहन को सबसे श्रेष्ठ माना गया है। गज अपारसंपत्ति एवं राज्य वैभव का प्रतीक है। रंक को राजा बनाने की शक्ति पद्मावती देवी को ही साध्य है।

तीनों लोकों की अधिनेत्री महालक्ष्मी स्वरूप अष्टलक्ष्मी के आठ तत्वों से विराजमान पद्मावती देवी अपार करुणा की प्रतिमूर्ति कही गई है।

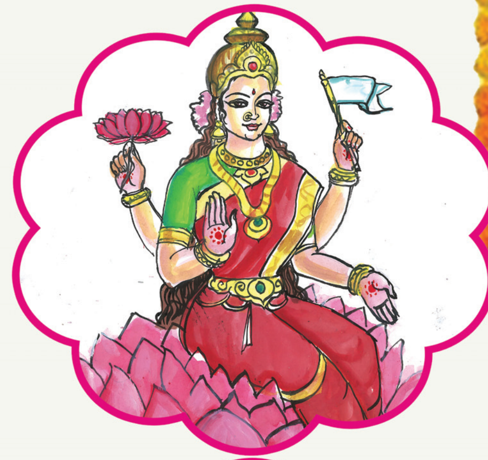

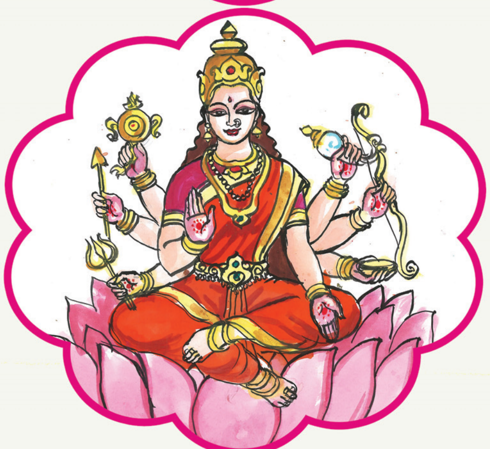

पंचमीतीर्थ

परमपावन तिरुचानूर क्षेत्र में पद्मावती देवी के भव्य ब्रह्मोत्सव वेला पर पंचमीतीर्थ का महत्व विख्यात है। आखरी दिन पंचमी पर यह कार्यक्रम का आयोजन शास्त्रोक्त रीति से किया जाता है। पद्मसरोवर से पद्मावती का आविर्भाव हुआ। इस बात की पुष्टि करने हेतु तथा उस दिव्य सरोवर की महिमा को सभी भक्तों के बताने के लिए पंचमीतीर्थ कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। उस दिन श्री वेंकटेश की मूर्ति का जुलूस निकाला जाता है। मंदिर को भेंट किये गये वस्तुओं के साथ जुलूस निकलती है। ब्रह्मोत्सव के सिलसिले में 'पुष्पयाग' कार्यक्रम शास्त्रोक्त रीति से आयोजित होता है। तिरुच्चि उत्सव एवं ध्वजावरोहण के साथ दिसंबर 6 तारीख को यह कार्यक्रम समाप्त होता है।

ब्रह्मोत्सवों के शुभवेला पर भक्त लोग बडी, संख्या में भाग लेना स्वाभाविक है। लेकिन सर्वजगत् की अधिष्ठात्री महालक्ष्मी स्वरूप पद्मावती के दर्शन के लिए यक्ष, किन्नर किंपुरुष, देवतागण भी लालायित रहते हैं। यात्रिगण, योगीश्वर, परिव्राजक, सिद्दपुरुष, तपस्वी लोग अदृश्यरूप से पद्मावती के दर्शन कर ब्रह्मोत्सव समय में आध्यात्मिक आनंद को प्राप्त करते हैं।

दयाशतकम् में श्री वेदांतदेशिक ने कहा -

त्वयि बहुमतिहीनः श्रीनिवासानुकम्पे
जगति गति मिहान्यां देवि सम्मन्यते यः।
स खलु विबुधसिन्धौ सन्निकर्षे वहन्त्यां
शमयति मृगतृष्णावीचिकाभिः पिपासान्।।

हे पद्मावती! श्रीनिवास पर अनुकंपा दिखानेवाली! कोई भक्त आप को छोड़कर किसी अन्य को शक्तिशाली मानता है, वह पास में बहती देव गंगा को छोड़कर मरीचिका के जल से अपनी पिपासा को तृप्त करना चाहता है।

परमदयालु, शक्तिशाली, महाविष्णु की अनपायिनी देवी पद्मावती का दर्शन मात्र से ही सभी अभीष्टों की सिद्धि प्राप्त होती है, तिरुचानूर ब्रह्मोत्सव के शुभावसर पर सभी भक्त पद्मावती का दर्शन कर कृतार्थता को प्राप्त करें।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

(गतांक से)

पल्लवों के बाद चंद्रगिरि पर शासन करनेवाले सालुव वंशीय राजा और विजय नगर साम्राज्य की स्थापना करके दक्षिण भारत में सुविशाल राज्य को बसानेवाले विजयनगर राजाओं ने तिरुमलेश की भूरी सेवा के साथ-साथ ब्रह्मोत्सवों के आयोजन में विशेष योगदान दिया है। सालुव नरसिंह रायलु श्रीनिवास के चरणों के पास रहनेवाले चंद्रगिरि राज्य के लिए सामंत राजा के रूप में रहा करते थे। उन्होंने सन् 1450 से 1493 तक यानी चौवालीस सालों तक राज्य किया था। मानिज नामक इतिहासकार के द्वारा इस का पता चलता है। यह अनुवंशिक रूप में चंद्रगिरि का राजा बना है। सन् 1482 में यानी सालुव नरसिंह रायलु के चंद्रगिरि पर शासन करते समय तिरुमल तिरुपति पुण्य क्षेत्रों में गोपुरों, मंटपों का निर्माण करके स्वर्णमुखी नदी के तट पर दुर्ग समुद्रम गाँव को देवदाय गाँव के रूप में श्रीनिवास के लिए समर्पित किया। यह दुर्ग समुद्रम गाँव बहुत उर्वरक है। आज भी अच्छी फसलें वहाँ होती हैं। उस गाँव को देखने से लगता है कि वह रायलसीमा का गाँव नहीं है। इन्होंने तिरुमल पहाड पर अनेक मंटपों के साथ-साथ ब्रह्मोत्सवों के विशेष आयोजन की व्यवस्था करवायी है। ब्रह्मोत्सवों के दिनों में तिरुमल पहुँचने के लिए इन्होंने पैदल रास्ते की सीढियाँ बनवायीं। क्योंकि अपने चंद्रगिरि राज्य में ही तिरुमल के रहने से उस की प्रगति के लिए सालुव नरसिंह रायलु ने दिन रात मेहनत की है। इन्हीं के दिनों में जन-जन के लिए ब्रह्मोत्सव एक मुख्य आकर्षण बने हैं।

इन्होंने अन्नमय्या के द्वारा रचित सारे संकीर्तनों को तांबे के टीनों पर लिखवाकर सुरक्षित रखने के कारण ही आज इस पीढी के वे संकीर्तन प्राप्त हो

श्रीनिवास के ब्रह्मोत्सव

-डॉ आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

रहे हैं। अन्नमय्या को हरि के अवतार के रूप में मान कर सालुव नरसिंह रायलु अन्नमय्या को गुरु के रूप में स्वीकार करके उन के संकीर्तनों को सुरक्षित करवाया है। इस रूप में तेलुगु साहित्य की बडी सेवा उन्होंने की है। इन के कार्य काल में ही हजारों संख्या में भक्तों ने तिरुमल पर आने का साहस किया है।

नरसिंह रायलु के बाद श्रीकृष्णदेवरायलु ने तिरुमल के मंदिर और उससे संबंधित उत्सवों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। श्रीकृष्णदेवरायलु ने कुल सात बार तिरुमल मंदिर के श्रीनिवास के दर्शन किए हैं। सातों बार भारी विजयों के साथ-साथ तिरुमल मंदिर के लिए अद्वितीय दान और उत्सवों का आयोजन करवाया है। पूर्वकाल में विजयनगर साम्राज्य में पुरुष लोग सर पर कुल्लायिओं को पहनते थे। कुल्लायी सर पर लंबी किरीट जैसी टोपी है। तीन चार झब्बे लटकते रहते हैं। एक ओर से देखने पर कुल्लायी एक प्रकार से लंबी टोपी है। इन को अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार लोग पहनते थे। कुछ लोग रेशम वस्त्र से बनी टोपियों को पहनते थे। कुछ लोग किरीट जैसी सोने के पानी चढाकर इस टोपी को पहनते थे। इस में वज्र और वैडूर्यों से जटित बनाते थे। धनी लोग ऐसी कुल्लायी पहनते थे। ऐसी एक कुल्लायी को रायलु ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी को भेंट के रूप में समर्पित किया था। आज भी श्रीनिवास की मूलमूर्ति को ऐसी ही कुल्लायी पहनायी जाती है।

श्रीकृष्णदेवरायलु ने चंद्रगिरि में रहते समय तिरुमल पर अनेक बार गया होगा... किंतु उन्होंने सन् 1509 फरवरी चौथी तारीख को पट्टाभिषेक करवाकर सन् 1529 तक यानी बीस सालों का शासन किया था। चक्रवर्ति के रूप में सात बार तिरुमल श्रीनिवास के दर्शन किए हैं। यह बहुत बडी विशेषता है। सप्तगिरियाँ, सप्त ऋषियाँ, सप्त समुद्र और रायल की सप्त यात्राएँ शाश्वत रूप से रह जायेंगी।

अच्युतदेवरायलु ने भी तिरुमल श्रीनिवास के दर्शन पहली बार सन् 31-01-1511 में किए थे। उस के साथ उस की देवेरी वरदाजी माई, पुत्र वेंकटाद्री भी आये थे। इस समय अच्युतदेवरायलु ही स्वयं श्रीनिवास की अर्चना की थी। कई मूल्यवान भेंटों को समर्पित किया था। इस समय के एक शिलालेख में उन दिनों में होनेवाले ब्रह्मोत्सवों के बारे में विवरण प्राप्त होता है। इन के समय नौ ब्रह्मोत्सव... गरुड वाहन, रथोत्सव, अच्युतराय ब्रह्मोत्सव, संकीर्तन, भांडार मेरवण, ग्रीष्म त्योहार, अध्ययनोत्सव, डोलोत्सव नामक ऊँजल सेवा, पवित्रोत्सव, सहस्रकलशाभिषेक, वसंतोत्सव, अमावास्या त्योहार, कल्याणोत्सव, सहस्रनामार्चन, पौर्णमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी पर्व, तिरुणम दिनमु, उत्तरम दिनम, दीपावली, उगादी, श्रीजयंती, युरियाडी एकादशी, दमनारोहणम, कोडैतिरुनाल, लक्ष्मी देवी माहात्म्यम, प्लवोत्सवम, फलोत्सवम, मेष संक्रमणम, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु,

उत्तर, मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराभाद्र, अर्पसि पुरडम, मकर संक्रमण, पडियावैट्टै, ताय पूसम, तन्निरामुडु, रथसप्तमी जैसे उत्सव अच्युतदेवरायलु के समय के एक शिलालेख में प्रस्तावित है।

अच्युतदेवरायलु ने बारह साल विजयनगर साम्राज्य पर अत्यंत वैभव के साथ शासन किया था। तिरुमल श्रीनिवास की कृपा कटाक्ष से ही मैं चक्रवर्ति बना हूँ, ऐसा वह सोचा करता था। इसलिए तिरुमल श्रीनिवास के मंदिर में प्रतिमा मंटप में एक ओर भाई श्रीकृष्णदेवरायलु, उसकी देवेरियों की पंचलोह की मूर्तियाँ हैं तो दूसरी ओर अपनी शिलामूर्ति के साथ-साथ अपनी देवेरी वरदाजी अम्मन की शिलामूर्ति प्रतिष्ठित करवा ली थी। मुकलित हस्तों के साथ सदा स्वामी की आराधना करते मंदिर में ही रह जाने की आशा के साथ...

अच्युतदेवरायलु के बाद वेंकटपति रायलु का भी ब्रह्मोत्सवों के आयोजन में विशेष योगदान रहा है। ब्रह्मोत्सवों का आयोजन इन के शासन काल में ही नौ दिनों तक मनाने की परंपरा बनी है, ऐसा शिलालेखी आधार प्राप्त होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि तिरुमलेश को नैवेद्य निवेदन के बाद ही घंटाध्वनि सुनने के बाद वे नित्य भोजन को स्वीकार करते थे। श्री वेंकटेश्वरस्वामी के दर्शन भाग्य को सारी जनता को प्रदान करने के उद्धेश्य से आप ने अपने समय के सिक्कों पर श्रीनिवास के चित्र के साथ-साथ वेंकटेशाय नमः को मुद्रित किया है। तिरुमल पर नहीं आ सकनेवाले लोग भी सिक्कों पर रहनेवाले वेंकटेश्वर स्वामी को स्पर्श करके, आंखों पर लगाकर स्मरण कर रहे हैं... यह इन्हीं की कृपा है। इन्होंने ही कई मंदिरों को नित्य धूप-दीप, नैवेद्य, उत्सवों के लिए मान्यों की व्यवस्था भी करवायी है।

विजयनगर राजाओं के काल में और उस के बाद भी कई विदेशी इतिहासकार दक्षिण भारत के दर्शन के लिए आये थे। उन्होंने लौटने के बाद अपने अनुभवों को लिपि बद्ध किया था। ऐसे स्रोतों से तिरुमल के ब्रह्मोत्सवों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। ऐसी जानकारियों के द्वारा पता चलता है कि तिरुमल के ब्रह्मोत्सवों को पहले पुरटासी ब्रह्मोत्सव के नाम से मनाते थे। इस में उस समय के राजा और शासनाधिकारी सहर्ष भाग लेते थे। यातायात की अच्छी सुविधाएँ नहीं होने के बावजूद बडी संख्या में लोक इकट्ठा होते थे। पूरी निष्ठा और भक्ति के साथ ब्रह्मोत्सवों का आयोजन होता था।

इस में पुरटासी ब्रह्मोत्सवों में यात्रियों के आने का विधान, उसी रूप में विजयनगर राजाओं के आने का विधान, उसी रूप में तिरुमल के मंदिर की आमदनी से संबंधित विवरण आदि शामिल हैं। अक्सर तमिल संप्रदाय के अनुसार ही ब्रह्मोत्सवों की तारीख आदि निश्चित किए जाते थे। उन को पुरटासी ब्रह्मोत्सव ही कहा जाता था, अंग्रेजी कैलेंडर के हिसाब से न होने के कारण हर साल ब्रह्मोत्सव की तारीख बदली जाती थी।

उस समय के प्राप्त इतिहास के आधार पर कहा जाता है कि ब्रह्मोत्सवों के आयोजनों के पंद्रह दिनों के पहले ही सामानों के साथ तिरुमल पहाड पर पहुँचा करते थे। उसी रूप में तीन-चार लाखों तक की संख्या में जन तिरुमल पर आते थे। उन में तीन सौ, चार सौ हजार घोडों पर, बाकी पैदल रास्ते से पहुँचा करते थे। दुनिया के कोने-कोने से लोग वहाँ वहाँ आया करते थे... ऐसा भी बताया जाता है... जनता के अपने मुँह से जितने सारे सामानों के

नामों का उच्चारण कर सकते थे, उतने सारे नामों के सामान तिरुमल पर उन दिनों में उपलब्ध होता था। इतना ही नहीं बल्कि जितनी मात्रा में चाहिए उतनी मात्रा में उपलब्ध होते थे। यहाँ पर एक और मुख्य विषय के बारे में बताना चाहिए कि ये जन यानी भक्त पगोडा (मैदान का प्रदेश) के पास यानी तिरुमल श्रीनिवास के मंदिर में अपनी भक्ति को दिखाने के लिए जाते समय स्नान करके, सुगंध परिमल को मिल कर, अच्छे कपडे पहन कर, सोने के आभरण पहन कर जाते थे, अगर पुरुष हो, तो अपने सर के बाल मुंडवाकर जाते थे।

आश्चर्य की बात यह है कि उस समय तिरुमल पर होनेवाले ब्रह्मोत्सवों की विशेषताओं, भाग लेनेवाले भक्तों की संख्या को, देश-विदेश के भक्तों के बारे में, वहाँ पर बेचे जानेवाले सामानों के बारे में, भक्तों के अलंकरणों के बारे में उस समय के इतिहास से समाचार प्राप्त होता है। यह बहुत ही अमूल्य समाचार है। इतिहासबद्ध इस समाचार से जानकारी मिलती है इस विजयनगर राजा लोग हर साल तिरुमल के पुरटासी ब्रह्मोत्सवों को दर्शन करने का विधान बहुत आसक्तिपूर्वक होता है। बडी संख्या में राजा अपने साथ जनता को साथ ले जाते थे। स्वयं आयोजन का निरीक्षण करते थे। समाचार आबंडन की सुविधाओं के न होनेवाले उस समय से संबंधित समाचार आज उपलब्ध नहीं होता है तो उस समय ब्रह्मोत्सवों के बारे कोई भी समाचार आज प्राप्त ही नहीं हो सकता था। समय-समय पर राजाओं के साथ-साथ शासनाधिकारी भी तिरुमल के दर्शन करते थे। खास कर उत्सवों के समय वे अधिक व्यय करते थे। उस समय के इतिहासकारों ने कई उत्सवों को और विशेषताओं को अपनी आंखों से देखा है। किंतु वे सब आज उपलब्ध नहीं हो रहे हैं। इतिहास में उल्लिखित उस समाचार के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है कि विश्व में तिरुमलेश जैसे भगवान दूसरा कोई नहीं है, ऐसा लगता है। तिरुमल विश्व के इतिहास में भी एक अपूर्व इतिहास है। राजा लोग अपने हजारों जनों के साथ पधार कर श्रीनिवास की सेवा करके, उन के ब्रह्मोत्सवों को अपनी आंखों से देखकर विश्व के किसी इतिहास में हमें दिखाई नहीं पडता है... सुना भी नहीं गया है।

शिलालेखों से पता चलता है कि तिरुमल में होनेवाले ब्रह्मोत्सवों को कभी कभार तिरुचानूर में भी मनाते थे... तिरुमल श्रीनिवास के मंदिर के निर्माण कार्यक्रम अनेक किश्तों में होते रहने के कारण इस रूप में श्रीनिवास के ब्रह्मोत्सवों को पहाड के नीचे तिरुचानूर में आयोजित करना पडा था... किसी भी मंदिर में अगर मरम्मत करनी है तो एक जगह पर बालालय का निर्माण करके मूलविराट की शक्ति को बालालय में प्रबंध किए गये पवित्र कलश में आह्वान करके बालालय कार्यक्रम करते हैं। मरम्मत पूरा होने के बाद फिर यज्ञ करके कलश के अंदर के पवित्र जलों को फिर से मूलविराट को अर्पण करने की तरह

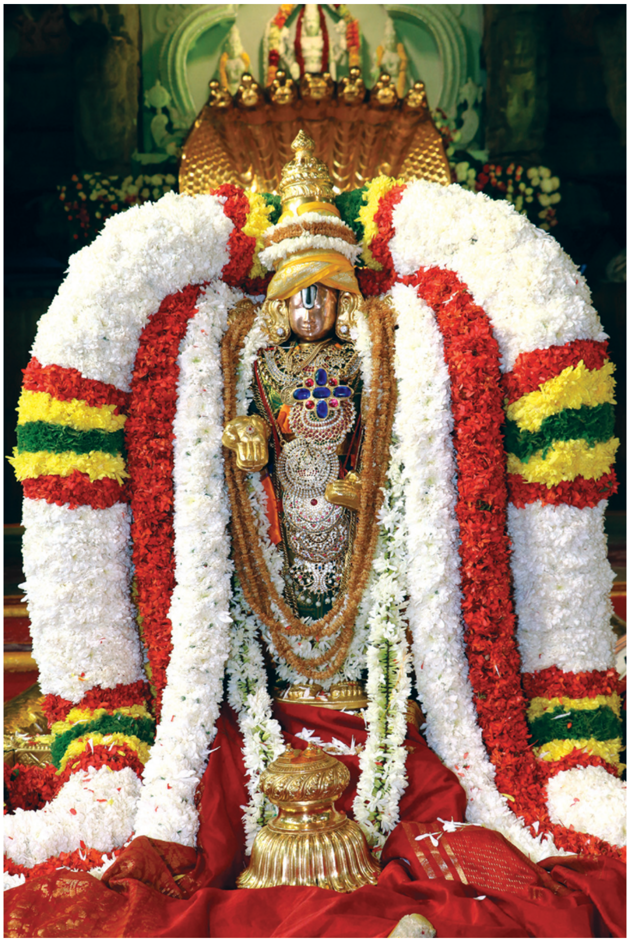

मंदिर के विमान गोपुरों की पूजा करते हैं। किंतु तिरुमल पहाड पर मरम्मत करते समय तिरुचानूर में ही बालालय के निर्माण करते आये हैं। ऐसे समयों में ब्रह्मोत्सवों को तिरुचानूर में ही निर्वहण किया गया, ऐसा समाचार शिलालेखों से प्राप्त होता है। इस रूप में कई सालों तक तिरुमल श्रीनिवास के ब्रह्मोत्सवों को तिरुचानूर में मनाया गया है। इस समय के तिरुमल श्रीनिवास के मंदिर के निर्वहण करनेवाले सबैयर्लु तिरुचानूर में ही वास करते थे।

विजयनगर साम्राज्य पर शासन करनेवाले अंतिम चक्रवर्तियों के काल में एक साल में दस ब्रह्मोत्सवों को मनाने के समाचार प्राप्त होता है। उन में एक ब्रह्मोत्सव के लिए चौदह दिन का समय लगता था। ऐसे में आज एक साल के लिए एक ब्रह्मोत्सव स्थिर हो गया है। किंतु दो सालों में एक बार आनेवाले अधिक मास के कारण दूसरे ब्रह्मोत्सव को नवरात्री ब्रह्मोत्सव के रूप में मनाते हैं। मतलब उस साल में दो ब्रह्मोत्सव मनाते हैं। नवरात्री ब्रह्मोत्सव के लिए ध्वजारोहण, लकडी का रथ, ध्वजावरोहण नहीं होते हैं।

ब्रह्मोत्सवों में रथोत्सव का अधिक महत्व है। असल में तिरुमल श्रीनिवास के लिए अनेक प्रकार के रथों पर सेवा संपन्न हुई हैं, ऐसा शिलालेखों के द्वारा समाचार प्राप्त होता है। विजयनगर साम्राज्य के इतिहास को रचनेवाले राबर्ट सूयोल पत्थर के रथ का प्रस्ताव किया है। तिरुमल में पत्थर के रथ में श्रीनिवास के उत्सव पर्व को मनाया गया है, ऐसा अपने ग्रंथ में उन्होंने लिखा है... उसी रूप में पत्थर के रथ से संबंधित स्थानीय इतिहास को भी उन्होंने प्रस्ताव किया है... मंदिर की ईशान दिशा में रहनेवाले रास्ते से सट कर एक जमाने में एक पत्थर का रथ हुआ करता था... आज वह तिरुमल के ट्रावेल्स बंग्ला उद्यान वन में चंद्रगिरि मार्ग को जानेवाली पगडंडी के आरंभ में है... उत्सवों में आड में पत्थर के रथ के होने से उसे ले जाकर ट्रावेल्स बंग्ला के उद्यान वन में पुनर्निर्माण किया है। पहले पहल पत्थर के रथ में ही श्रीनिवास ने पूजाएँ प्राप्त की हैं। वैसे काट का रथ श्रीनिवास के ब्रह्मोत्सवों में काफी महत्व रखता है। तिरुमल श्रीनिवास के मंदिर के शिलालेखों में, अन्नमय्या के संकीर्तनों में काट के रथ के कई उल्लेख प्राप्त होते हैं। अब चांदी के रथ को वार्षिक वसंतोत्सवों के दूसरे दिन, अधिक मास में आनेवाले नवरात्री ब्रह्मोत्सवों में आठवें दिन चांदी के रथ पर श्रीनिवास अपनी दोनों देवेरियों के साथ विहार करते हैं। आज तो चांदी के रथ की जगह सुवर्ण रथ पर स्वामी शोभायात्रा करते हैं। उस के बाद ब्रह्मोत्सवों के समापन के अगला दिन संध्या के समय उत्सवमूर्तियों को आस्थानम के पूरा होने के बाद तिरुवीथियों में तिरुच्चि में अपरिक्रमा के रूप में रवाना होकर आल्वार तालाब के पास जाते हैं। वहाँ पर अच्छे ढंग से अलंकार किए गए आनंताल्वार के बगीचे के मंटप में आसीन होते हैं। वहाँ पर फिर से आस्थानम होने के बाद उसी रूप में मंदिर पर पहुँचकर अपरिक्रमा की रीति से पूरा करते हैं... इस रूप में करनेवाले उत्सव को 'बाग सवारी' उत्सव कहते हैं। हाल ही में 'कोविड' महाम्मारी के फैलने के कारण श्रीनिवास के ब्रह्मोत्सवों को एकांत में मनाकर स्वामी के भक्तों को रोग मुक्त रखने की कोशिशें भी हुई हैं।

विश्व भर में प्रसिद्ध श्रीनिवास के ब्रह्मोत्सवों की इस रूप में लंबी परंपरा है। उनके भक्तों को महानंद देनेवाले कलियुग के प्रत्यक्ष देव श्री वेंकटेश्वर स्वामी के ब्रह्मोत्सव विश्व भर में अपनी सानी नहीं रखते हैं। अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायक सप्तगिरीश श्री वेंकटेश्वर स्वामी के ब्रह्मोत्सव मानवता को ही पुनीत करनेवाले महोत्सव हैं... लोककल्याण की कामना से पूरी निष्ठा और श्रद्धा के साथ मनाये जानेवाले श्रीनिवास के ब्रह्मोत्सव अपूर्व और अमोघ हैं। इस लोक में ब्रह्मोत्सवों से बढकर और कोई उत्सव है नहीं हैं।

ओम नमो वेंकटेशाय। (समाप्त)

श्री शिव पूजा विधान

'कार्तिक माह' के अवसर पर शिव पूजा विधान... 'सप्तगिरि' पाठकों के लिए...!! शास्त्र कहते हैं कि कार्तिक माह से पवित्र माह कोई नहीं है। इस पवित्रता के कारण इस महीने का हर दिन महान है। सोमवार भगवान शिव के लिए सबसे शुभ सप्ताह है। कार्तिक सोमवार के दिन की गई शिव पूजा अत्यंत शुभ-फल प्रदान करती है। हम चाहते हैं कि इस महीने में आप सब ने हर घर में अपने पसंदीदा देवताओं की पूजा के साथ-साथ शिव पूजा भी करें और परिवार के रुप में भगवान की कृपा प्राप्त करें।

आचम्य - (केशवादि नामों से आचमन करना है।) प्राणायाम करना चाहिए।

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशांतये।।

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
अविघ्नं कुरुमेदेव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

श्री महाविष्णोराज्ञाया प्रवर्तमानस्य अद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्थे श्वेतवराह कल्पे वैवस्तव मन्वंतरे कलियुगे प्रथमपादे जंभूद्वीपे भरतवर्षे भरतखंडे मेरोः दक्षिण दिग्भागे श्रीशैलस्य.... प्रदेशे.... गंगाकावेर्योः मध्यदेशे समस्त देवता ब्राह्मण हरिहर गुरुचरण सन्निधौ अस्मिन् वर्तमान व्यावहारिक चांद्रमानेन.... नाम संवत्सरे.... अयने ऋतौ.... मासे.... पक्षे... शुभतिथौ.... वारे शुभनक्षत्रे शुभयोग शुभकरण एवंगुण विशेषण विशिष्टायां शुभतिथौ श्रीमान्.... नामधेयः.... श्रीमतः.... गोत्रस्य नामधेयस्य धर्मपत्नी समेतस्य मम उपात्त समस्त दुरितक्षय द्वारा सांबसदाशिव मुद्दिश्य सांबसदाशिवप्रीत्यर्थं अस्माकं सहकुटुंबानां क्षेमस्थैर्य धैर्य विजय आयुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं समस्त सन्मंगला वाप्यर्थं कल्पोक्त प्रकारेण शिवपूजां करिष्ये।

गणेशस्मरण

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजंभूफलचारु भक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।

कुमारस्मरण

उमाकोमलहस्ताब्ज संभावितललाटिकम्।
हिरण्यकुंडलं वंदे कुमारं पुष्करस्रजम्।।

लक्ष्मीनारायणस्मरण

यज्ञेश अच्युतगोविंद माधव अनंत केशव।
कृष्ण विष्णोहृषीकेश वासुदेव नमोस्तुते।।

सिद्धलक्ष्मीः मोक्षलक्ष्मीः जयलक्ष्मीः सरस्वती।
श्रीर्लक्ष्मीर्वरलक्ष्मीश्च प्रसन्नामम सर्वदा।।

नंदिस्तुति

नंदिकेश महाभाग शिवध्यान परायण।
महादेवस्य पूजार्थं अनुज्ञां दातुमर्हसि।।

वीरभद्रस्मरण

वीरभद्र नमस्तेस्तु शिवाज्ञानु प्रवर्तक।
दक्षाध्वर ध्वंसकाय भद्ररुपायते नमः
श्री उमामहेश्वराभ्यां नमः
श्रीलक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः
श्रीवाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः
श्रीशचीपुरन्दराभ्यां नमः
श्रीअरुंधती वसिष्टाभ्यां नमः
श्री सीतारामाभ्यां नमः
सर्वेभ्यो महाजनेभ्यो नमः

ध्यान

ध्यायामि शंकरं शंभुं नीलग्रीवं त्रिलोचनम्।
गंगाधरमुमाकान्तं नित्यकल्याणरूपिणम्।।
गोक्षीर धवलाकारं चंद्रबिंब समाननम्।
भस्मभूषित सर्वांगं रुद्राक्षाभरणान्वितम्।।
सांबसदाशिवं ध्यायामी।

आवाहन

आवाहयामी देवेशमादिमध्यांत वर्जितम्।
आधारं सर्वलोकानां आश्रितार्ति विनाशनम्।।
सांबसदाशिवं आवाहयामी।

आसन

आसनं गृह्यतामीश निर्मलं स्वर्णनिर्मितम्।
आधारं सर्वजगता मंधकासुरसूदन।।
सांबसदाशिवाय नमः आसनं समर्पयामी।

पाद्यं

पाद्यं गृहाण भगवान् पावनं परमेश्वर।
पार्वती हृदयानंद! पापं सर्वं व्यपोहय।।
सांबसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामी।

अर्घ्यं

अर्घ्यं गृहाण गिरीश गंधपुष्पाक्षतैर्युतम्।
अघमज्ञानमखिलं नीलकंठ निवारय।।
सांबसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामी।

आचमन

गृहाणाचमनार्थाय गंगाय सरिदाहृतम्।
विमलं जलमीशान व्याधीन्मे विनिवारय।।
सांबसदाशिवाय नमः आचमनीयं समर्पयामी।

पंचामृतं

पंचामृतं गृहाणेदं पन्नगेश्वरभूषण।
पंचवक्त्र नमस्तुभ्यं पंचपापानि नाशय।।
सांबसदाशिवाय नमः पंचामृतं समर्पयामी।

स्नान

गंगाक्लिन्न जटाभार सोम सोमार्धशेखर।
सह्यजादि सरित्तोयैः स्नानंकुरु सदाशिव।।
सांबसदाशिवाय नमः स्नानं समर्पयामी।

(अब यहाँ शिव भगवान का अभिषेक करना चाहिए। अभिषेक करते समय 'शिवाय नमः' जैसा नाम को स्मरण करना है। इस नाम के साथ ''ईशान ते तत्पुरुष नमो घोराय ते सदा वामदेव नमस्तुभ्यं सद्योजातायवै नमः।'' - जैसा श्लोक को, ''नमश्शंकराय नमश्शंभवे नमश्शिवाय नमोभगवते रुद्राय'' ''नमश्शिवाय सांबाय शांताय परमात्मने'' जैसा वाक्य को पठन करना है। शिवलिंग नहीं हुआ, तो बिल्व दल को पानी में डुबाकर, शिव भगवान का चित्रपट को उस दल से प्रोक्षण करके अभिषेक करने की भावना से स्नान का प्रक्रिया को पूरा करना है।)

वस्त्रं

गज चर्म धरानन्त गरलांकित कंधर।
दुकूलं गृह्यतां देव दुर्गतिं मे निवाराय।।
सांबसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामी।

उपवीतं

उपवीतं गृहाणेश पवित्रं परमं शुभम्।
उमाकांत नमस्तुभ्यमुत्तमं देही मे फलम्।।
सांबसदाशिवाय नमः उपवीतं समर्पयामी।

आभरण

कुंडलांगद मुख्यानि कुंडलीश्वर भूषण।
भूषणानि गृहाणेश भूति भूषित विग्रह।।
सांबसदाशिवाय नमः आभरणानि समर्पयामी।

गंधं

गंधं कुंकुम संयुक्तं मृगनाभिसमन्वितम्।
महादेव गृहाणेश महापापविनाशन।।
सांबसदाशिवाय नमः गंधं समर्पयामी।

अक्षत

अक्षतानक्षत विभो नक्षत्रेश विभूषण।
शुद्ध स्फटिक संकाश स्वामिन् स्वीकुरु शंकर।।
सांबसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामी।

पुष्पम्

मल्लिका कुंदमंदार कमलादीनि शंकर।
पुष्पाणि बिल्वपत्राणि गृहाण करुणानिधे।।
सांबसदाशिवाय नमः पुष्पाणि समर्पयामी।

अंगपूजा

परमाय नमः - पादौ पूजयामी,
गुणातीताय नमः - गुल्फौ पूजयामी,
जन्महीनाय नमः - जानुनी पूजयामी,
जगत्पित्रे नमः - जंघे पूजयामी,
उमापतये नमः - ऊरू पूजयामी,
गिरीशाय नमः - गुह्यं पूजयामी,
करुणाकराय नमः - कटिं पूजयामी,
नानारूपाय नमः - नाभिं पूजयामी,
उत्तमाय नमः - उदरं पूजयामी,
वामदेवाय नमः - वक्षः पूजयामी,
बहुरूपाय नमः - बाहून् पूजयामी,
हराय नमः - हस्तौ पूजयामी,
नीलकंठाय नमः - कंठं पूजयामी,
पंचमुखाय नमः - मुखं पूजयामी,
त्रिनेत्राय नमः - नेत्राणि पूजयामी,
फालनेत्राय नमः - फालं पूजयामी,
श्रुतिगम्याय नमः - श्रोत्रे पूजयामी,
कपर्दिने नमः - कपर्दं पूजयामी,
शिवाय नमः - शिरः पूजयामी,
सर्वेश्वराय नमः - सर्वाण्यंगानि पूजयामी।।

शिवाष्टोत्तर शतनामों से पूजा

ॐ शिवाय नमः
ॐ महेश्वराय नमः
ॐ शंभवे नमः
ॐ पिनाकिने नमः
ॐ शशिशेखराय नमः
ॐ वामदेवाय नमः
ॐ विरूपाक्षाय नमः
ॐ कपर्दिने नमः
ॐ नीललोहिताय नमः
ॐ शंकराय नमः 10
ॐ शूलपाणये नमः
ॐ खट्वांगिने नमः
ॐ विष्णुवल्लभाय नमः
ॐ शिपिविष्टाय नमः
ॐ अंबिकानाथाय नमः
ॐ श्रीकंठाय नमः
ॐ भक्तवत्सलाय नमः
ॐ भवाय नमः
ॐ शर्वाय नमः
ॐ त्रिलोकेशाय नमः 20
ॐ शितिकंठाय नमः
ॐ शिवप्रियाय नमः
ॐ उग्राय नमः
ॐ कपालिने नमः
ॐ कामारये नमः
ॐ अंधकासुरसूदनाय नमः
ॐ गंगाधराय नमः
ॐ ललाटाक्षाय नमः
ॐ कालकालाय नमः
ॐ कृपानिधये नमः 30
ॐ भीमाय नमः
ॐ परशुहस्ताय नमः
ॐ मृगपाणये नमः
ॐ जटाधराय नमः
ॐ कैलासवासिने नमः
ॐ कवचिने नमः
ॐ कठोराय नमः
ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
ॐ वृषांकाय नमः
ॐ वृषभारूढाय नमः 40
ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
ॐ सामप्रियाय नमः
ॐ स्वरमयाय नमः
ॐ त्रयीमूर्तये नमः
ॐ अनीश्वराय नमः
ॐ स्वरज्ञाय नमः
ॐ परमात्मने नमः
ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
ॐ हविषे नमः
ॐ यज्ञमयाय नमः 50
ॐ सोमाय नमः
ॐ पंचवक्त्राय नमः
ॐ सदाशिवाय नमः
ॐ विश्वेश्वराय नमः
ॐ वीरभद्राय नमः
ॐ गणनाथाय नमः
ॐ प्रजापतये नमः
ॐ हिरण्यरेतसे नमः
ॐ दुर्धर्षाय नमः
ॐ गिरीशाय नमः 60
ॐ गिरिशाय नमः
ॐ अनघाय नमः
ॐ भुजंगभूषणाय नमः
ॐ भर्गाय नमः
ॐ गिरिधन्विने नमः
ॐ गिरिप्रियाय नमः
ॐ कृत्तिवाससे नमः
ॐ पुरारातये नमः
ॐ भगवते नमः
ॐ प्रमथादिपाय नमः 70
ॐ मृत्युंजयाय नमः
ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
ॐ जगद्व्यापिने नमः
ॐ जगद्गुरवे नमः
ॐ व्योमकेशाय नमः
ॐ महासेनजनकाय नमः
ॐ चारुविक्रमाय नमः
ॐ रुद्राय नमः
ॐ भूतपतये नमः
ॐ स्थाणवे नमः 80
ॐ अहिर्भुध्न्याय नमः
ॐ दिगंबराय नमः
ॐ अष्टमूर्तये नमः
ॐ अनेकात्मने नमः
ॐ सात्विकाय नमः
ॐ शुद्धविग्रहाय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ खंडपरशवे नमः
ॐ अजाय नमः
ॐ पाशविमोचनाय नमः 90
ॐ मृडाय नमः
ॐ पशुपतये नमः
ॐ देवाय नमः
ॐ महादेवाय नमः
ॐ अव्ययाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ पूषदंतभिदे नमः
ॐ अव्यग्राय नमः
ॐ दक्षाध्वरहराय नमः
ॐ हराय नमः 100
ॐ भगनेत्रभिदे नमः
ॐ अव्यक्ताय नमः
ॐ सहस्राक्षाय नमः
ॐ सहस्रपदे नमः
ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ तारकाय नमः
ॐ परमेश्वराय नमः 108

सांबसदाशिवाय नमः
अष्टोत्तर शतनामपूजां समर्पयामी।

(यहाँ बिल्वाष्टक के साथ एक-एक श्लोक केलिए 'शिवाय नमः' कहकर बिल्व पत्र को समर्पण करना चाहिए।)

शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः
रुद्राय अग्निमूर्तये नमः
भीमाय आकाशमूर्तये नमः
महादेवाय सोममूर्तये नमः
भवाय जलमूर्तये नमः
उग्राय वायुमूर्तये नमः
पशुपतये यजमानमूर्तये नमः
ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

धूपं

दशांगं गुग्गुलोपेतं सुगंधं सुमनोहरं।
आघ्रेय स्सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्।।
सांबसदाशिवाय नमः धूपमाघ्रापयामी।

दीपं

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वह्निनायोजितं मया।
गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
सांबसदाशिवाय नमः दीपं समर्पयामी।

नैवेद्य

अन्नं चतुर्विधं सूप फलभक्ष्य समन्वितं।
दधि मध्वाज्य संयुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
सांबसदाशिवाय नमः अमृत महानैवेद्यं समर्पयामी।
मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामी। आचमनीयं समर्पयामी।

तांबूल

पूगी फलसमायुक्तं नागवल्ली दलैर्युतं।
कर्पूर चूर्ण संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम्।।
सांबसदाशिवाय नमः कर्पूर तांबूलं समर्पयामी।

नीराजन

चंद्रादित्यौच धरणीच विद्युदग्नित्वमेवच।
त्वमेव सर्वज्योतींषि भज नीराजनं प्रभो।
सांबसदाशिवाय नमः आनंदकर्पूर नीराजनं समर्पयामी।

पुष्पांजलि

मंदार नीलोत्पल कुंदजाती पुन्नागमल्ली करवीर पंकजैः।
पुष्पांजलीं बिल्वदलैस्तु देव सांब! त्वदंघ्रौ विनिवेशयामी।।
सांबसदाशिवाय नमः मंत्रपुष्पांजलीं समर्पयामी।

प्रदक्षिण (परिक्रमा) नमस्कार

यानिकानिच पापानि जन्मांतर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिण पदे पदे।।
सांबसदाशिवाय नमः आत्मप्रदक्षिण(परिक्रमा) नमस्कारान् समर्पयामी।

नमस्कार

महादेव नमस्तेस्तु मन्मथारे नमोस्तुते।
अमृतेश नमस्तुभ्यं आश्रितार्थ प्रदायिने।।
सांबसदाशिवाय नमः नमस्कारान् समर्पयामी।

छत्र-चामर

त्राहिमां देवदेवेश तरुणेन्दु शिखामणे।
ईप्सितं देहि मे देव दयाराशे नमोस्तुते।।
सांबसदाशिवाय नमः छत्रचामर नृत्तगीतं वाद्यादि समस्त राजोपचारान् समर्पयामी।

इदमर्घ्यम्

पूजांते श्रीरर्घ्य प्रदानं करिष्ये-

नमः शिवाय सांबाय सर्वपापहराय च।
शिवदेव मयादत्तमिदमर्घ्यं गृहाण प्रभो।।
सांबसदाशिवाय नमः इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्।
मयाकृतान्यशेषानि पापानि नुद शंकर।
महादेव! मयादत्तं गृहाणार्घ्यं मया शिव।
सांबसदाशिवाय नमः इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्।
व्योमकेश नमस्तुभ्यं सोमात्मन् व्योमरूपिणे।
नक्षत्रमालिने देव गृहाणार्घ्यमिदं प्रभो।।
सांबसदाशिवाय नमः इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्।
अंबिकायै नमस्तुभ्यं नमस्ते देवी पार्वती।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सुप्रीतावरदाभव।।
अंबिकायै नमः इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्।
सुब्रह्मण्य महाभाग कार्तिकेय सुरोत्तम।
गृहाणार्घ्यमिदं दत्तं सुप्रीतो वरदोभव।।
सुब्रह्मण्याय नमः इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्।
नंदिकेश महाभाग शिवध्यान परायण।
गृहाणार्घ्यमिदं दत्तं नंदिकेश नमोस्तुते।।
नंदिकेशाय नमः इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्।
चंडिकेशाय नमः इदमर्घ्य मिदमर्घ्य विदमर्घ्यम्।
अनया पूजया अर्घ्य प्रदानेन च सपरिवारः
सांबशिवः प्रीयताम्।।
करचरणकृतं वा कर्मवाक्कायजं वा
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
शिवशिव करुणाब्धे श्री महादेव शंभो!।।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - 14

वैष्णव आल्वारों द्वारा श्री वेंकटेश्वर का गुण - कीर्तन

तमिल वैष्णव भक्त आल्वारों की संख्या बारह है। उन भक्तों ने भगवान का कीर्तन किया है। उनके कीर्तनों (पदों) को तमिल में 'पाशुरम' कहते हैं। ये पाशुरम कुल संख्या में चार हजार हैं। इनमें विष्णु और उनके अवतारों की प्रशस्ति गायी गयी है। इनकी समष्टि को ''नालायिर दिव्य प्रबन्धम्'' कहते हैं। ये 108 वैष्णव केन्द्रों में गाये जाते हैं। आल्वारों में प्रथम तीन आल्वारों को ''मुदल - आल्वार'' कहते हैं। वे निम्न लिखित हैं - (1) पोयूगै आल्वार (2) पूदत्त आल्वार और (3) पेयाल्वार। अन्य हैं - (4) तिरुमलिशै आल्वार (इन्हें प्रथम तीन आल्वारों के समकालीन मानते हैं और इनको भी मिलाकार (चौथे आल्वार) आल्वार चतुष्टय कहते हैं - प्रथम आल्वारों में गिनते हैं), (5) नम्माल्वार (6) मधुरकवि आल्वार (7) पेरियाल्वार या विष्णुचित्त (8) विष्णुचित्त की पोषिता पुत्री आण्डाल या गोदादेवी (9) कुलशेखर आल्वार (10) तोंडरडिप्पोडि आल्वार या भक्तांघ्रिरेणु (11) तिरुप्पन आल्वार या योगिवाहन और (12) तिरुमंगै आल्वार।

आल्वारों ने विष्णु के प्रति अडिग विश्वास, अविकल भक्ति और संपूर्ण आत्म समर्पण को स्वीकारा है। केवल विष्णु भगवान पर ही नहीं, उनके सभी अवतारों के प्रति भी उसी प्रकार की निष्ठा का प्रचार वैष्णवों में हैं। विष्णु भगवान और उनके अवतारों की मूर्तियों से विलसित मंदिरों पर उन्होंने भक्ति और श्रद्धा रखने पर अधिक बल दिया है। माना जाता है कि उनकी अवधारणा पद्धति, प्रचार शैली ने विष्णु भक्ति को और प्रचार को बल और दिशा दी है। उनके सिद्धान्त ही प्रचलित हैं। दीक्षा मार्ग भी उन्होंने प्रशस्त किया है। इन्होंने ही वैष्णव पूजा या आराधना पद्धतियों का आविष्कार किया। दक्षिण भारत में वैष्णव धर्म की स्थापना इन्हीं के द्वारा हुई है - यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी। वैष्णव धर्म का प्रचार और परिवर्तन क्रम आगे चलकर श्री रामानुजाचार्य और उनके अनुयायियों द्वारा जोरों पर चला है।

मधुरकवि आल्वार और तोंडरडिप्पोडि आल्वार को छोडकर अन्य दस आल्वारों ने श्री वेंकटेश्वर पर भी कुछ पाशुरम गाये हैं।

पोयूगै आल्वार

पोयूगै आल्वार का जन्म काँचीपुरी में हुआ माना जाता है। वहीं उनके व्यक्तित्व का विकास भी हुआ था। इन्होंने सौ पाशुरम गाये हैं। ये प्रथम पाशुर शतक माने जाते हैं। चार सहस्र पाशुरम के प्रथम सौ होने के नाते इन्हें ''मुदल तिरुवंदादि'' कहते हैं। ''नालायिर दिव्य प्रबंधम्'' के प्रथम पाशुर शतक में एक दर्जन या उससे अधिक पाशुरम भगवान श्री वेंकटेश्वर पर हैं। इनमें वेंकटाचल को ''वेंगडम्'' और श्री वेंकटेश्वर को ''वेंगडत्तै'' (सं.68) या ''वेंगडत्तुमेयन'' (सं.99) कहा गया है। ये वेंकटाद्रि को बडे बडे मस्त हाथियों और नागों का पहाड कहते हैं और उन पर्वत शिखरों तथा वनों में ''कुरवा'' जाति के लोगों के रहने की बात भी कही है। इसे श्री लक्ष्मीपति का वास स्थान कहते हुए उन्होंने घोषित किया है कि ये सुरों (देवता) से पूजित और आराधित हैं। (सं.38)। जब भगवान विष्णु ने प्रलय के बाद पृथ्वी को सागर से उभारा था तभी उन्होंने इस शैल को अपना निवास बना लिया था। उन्होंने आगे कहा है कि गोवर्धन गिरिधारी भी ये ही हैं। गोवर्धन गिरिधारी बनकर इन्द्र के प्रकोप से पीडित गायों और व्रजवासियों की रक्षा इन्होंने ही की है। कंस को मारनेवाले और क्षीरसागर की लहरियों पर शयन करनेवाले भगवान भी ये ही हैं। (सं.39)। यह वेंगडम् श्रीकृष्ण का प्रिय स्थान है। भक्त चारों दिशाओं से श्रीशैलवास की पूजादि के लिए दीप, फूल आदि लाकर अर्चना करते हैं। श्रीकृष्ण धवल शंख बजाते हैं। (सं.37)। श्रीवेंगडम् पर रहनेवाले हाथियों का समूह ''कुरवा'' लोगों के मशालों की कांतियों और उनके हाथों में रहनेवाले धनुष-बाणों को देखकर तितर-भितर हो चारों दिशाओं में भागता है। उनको ऐसा लगता है कि आसमान से आग बरस रही है। यह वेंगडम् पहाड भगवान नृसिंह का भी वांछित वास है। (सं.40)। चार वैष्णव धामों में से भगवान वेंगडम् पर खडे मिलते है (ये स्थानक मूर्ति हैं); विन्नगर या परमेश्वरन्नगर काँची में बैठे मिलते हैं (आसन मूर्ति हैं); वेंका (यह भी कांची में) शयन मूर्ति हैं और फूल कोविल या तिरुक्कोवलूर (ख्यात नगर पोन्नागर में) संचार मूर्ति (चलते रूप में) हैं। अगर भक्त उनकी ध्यान से आराधना करता है तो उसकी सारी व्यथाएँ दूर हो जाती हैं (सं.77)। जो भगवान स्वर्ग या वैकुंठ में रहते है, वे ही पृथ्वी पर रहते हैं, वेंगडम् पर रहते हैं और वेदों में भी वास करते हैं। आल्वार आगे प्रश्न करते हैं कि कौन भगवान की महत्ता को पूरी तरह समझ सकता है? सभी युगों में और क्षीरसागर में शयनित भगवान की विशिष्टताओं का वर्णन कौन कर सकता है? (सं.68)। हे भगवान! अगणित गुण संपन्न और समस्त पृथ्वी को नापनेवाले वामन! आपकी प्रार्थना करनेवाला भक्त वेदों से घोषित विशिष्ट पद को प्राप्त करेगा। वेंगडम् भी उसी पद को संप्राप्त करायेगा (सं.76)। वेंगडम् जहाँ पर नारियों से पुष्प मालाएँ द्वादशी के दिन पर प्रस्तुत होती हैं उनकी कामनाएँ भी संपन्न होती हैं। काली घटाओं से आच्छादित पर्वत शिखर और पूजा धूप से उमडनेवाली धुवाँ सबसे पूरित हो बहुत ही पवित्र लगता है। यह वही पर्वत

स्थल है जहाँ पर श्रीराम ने मारीच का वध किया। (सं.82)। हे मेरा गुणी मस्तिष्क! तुम्हें मालूम है कि पुरुषोत्तम हमारे सत की रक्षा करते हैं। वे उसको अनवरत कायम रखने के प्रयास में व्यस्त रहते हैं। ये हमेशा योगियों के मनों में विहार करते रहते हैं। समझो कि ये भगवान, क्षीरसागर शयन, ही वेंगडम् पर निवास करनेवाले परमात्मा हैं। ये ही हमारे हृदयों में भी विलसे हैं। उनका ही ध्यान कर! (सं.99)। वेंगडम् शरणागत भक्तों के पापों को भस्मीभूत करता है। कैवल्य प्रदान करता है। तुलसीमालाधारी का स्मरण ही अंतिम शरण है। यह पर्वत भक्ति की ज्वाला को बढाता है। नित्य सूरियों की भक्ति स्रवंति को प्रवाहित करता है। (सं.26)।

[[उक्त भावों से सिक्त दस पाशुरम ''आल्वार के मंगलाशासन हैं। उनका सार यहाँ प्रस्तुत है। ये पाशुरम श्री टी.के.वी.यन.सुन्दराचार्य द्वारा संपादित और तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् से प्रकाशित हैं। डॉ.यस.कृष्णस्वामी अय्यंगार अपनी पुस्तक 'हिस्टरी ऑफ तिरुपति' खण्ड I में कुछ अन्य पाशुरों का उल्लेख करते हैं यथा सं 98 और 28, पृष्ठ. 65-66 और सं. 5 और 74 पृ. 59-60.''

पाशुरम सं. 98 और 28 का उल्लेख करते हुए वे कहते हैं कि ''पोय्गै आल्वार पाशुरम 98 में कहते हैं - स्वर्णाभ और काली जटाओं से विलसित शिव और विश्व को नापनेवाले त्रिविक्रम विष्णु अपने अपने स्थानों में चाहे रहे, चाहे दो रूपों में हो, वे दोनों एक दूसरे के हृदयों में रहते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि आल्वार के विचार से दोनों में अभेद है। यह भावना पाशुरम 28 में और स्पष्ट है। उसमें विष्णु से प्रार्थना है। उसमें कहा गया है - 'हे नीलवर्ण! आपके हाथों में शंख और चक्र हैं। आपके वक्षःस्थल पर कमलोद्भवा लक्ष्मी हैं। आप की नाभि में सृष्टिकर्ता ब्रह्म हैं। वे वेद सृजक हैं।' शरीर के एक पक्ष में तीनपुरों (त्रिपुरों) को दहित करनेवाले भी शोभित हैं (शिव)।''

ये संदर्भ यह स्पष्ट करते हैं कि शिव विष्णु शरीर के भाग हैं और विष्णु शिव के। शिवानंदलहरी में शिव की पत्नी के रूप में विष्णु को (मोहिनी) सूचित किया गया है।]]

पाशुरम 5 और 74 को पादटिप्पणी में रखते हुए डॉ.यस.के.अय्यंगार लिखते हैं कि ''पाशुरम 5 और 74 प्रथम शतक पाशुर हैं। वे इस प्रकार कहते हैं अरन (हर) और नारायन (नारायण), उनके बाहन क्रमशः वृषभ और गरुड, उनके शब्द (तमिल में नुल और संस्कृत में तंत्र, आगम), मरै (वेद), आवास कैलाश और पानी (समुद्र), हाथ के आयुध त्रिशूल और चक्र, उनका रूप अग्नि और नीलघन श्याम हैं।'' यही पाशुरम 74 में भी लगभग पुनरुक्त है। उसमें कहा गया है कि 'ये वृषभ और गरुड पर आरूढ़ होते हैं, उन्होंने तीनों पुरों का नाश किया, उन्होंने हिरण्यकश्यप का वक्षःस्थल चीरा है (नृसिंह), उन्होंने भस्म (विभूति) धारण किया है, ये नीलमणि सम भास्वर शरीर के हैं। इनका अर्द्ध शरीर स्त्री (पार्वती) का है और एक अन्य भाग में कमलोद्भवा लक्ष्मी है। उनकी लंबी जटाएँ हैं। वे बडे और लंबे मुकुट पहने हुए हैं। वे सिर पर गंगा को धारण करते हैं। ये त्रिविक्रम है। लंबे पदवाले हैं। यहाँ स्पष्ट है कि भगवान द्विरूपात्मक हैं - हर और हरि। दोनों के शरीरों की आकृतियों में प्राप्त विशेषताएँ इस द्वंद्व मूर्ति में हैं। इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि ये हरि और हर है। (शिव और विष्णु)।

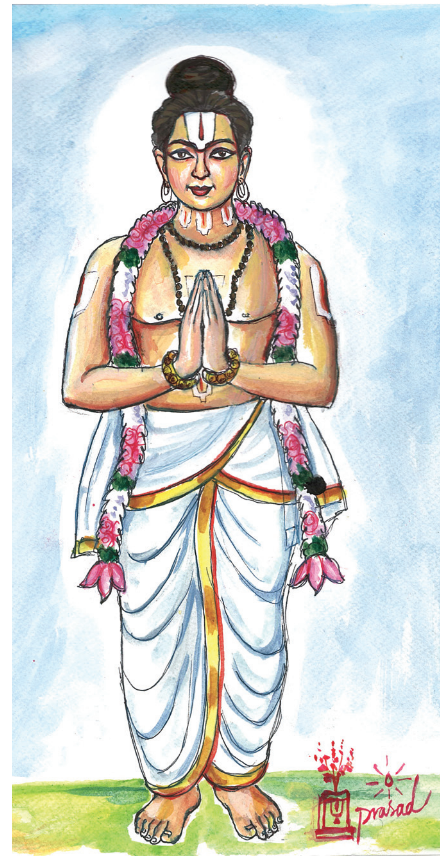

पूदत्त आल्वार

पूदत्त आल्वार प्रथम आल्वार चतुष्टय में द्वितीय हैं। कहा जाता है कि इनका जन्म महाबलिपुरम् में हुआ था।

'नालायिर दिव्य प्रबन्धम्' का 25वाँ पाशुरम(प्रबन्धम्), जो प्रथम शतक में गिना जाता है, (द्वितीय तिरुवंदादि में है), स्पष्ट करता है कि लंका में पैर धरकर जिस भगवान ने रावण का संहार किया है वे ही वेंगडम् (वेंकटाद्रि) पर अधिवसित हैं। पाशुरम 28 कहता है कि महान भक्तों और महर्षियों द्वारा कीर्तित भगवान, देवताओं के अधिदेव, क्षीरसागर शयनी, श्रीकृष्ण, राक्षस केशी के संहारक, श्रीरंगधामवासी और वेंकटनगाधिपति उनके हृदय में (पूदत्त आल्वार के दिल में) रहते हैं। इसी प्रकार पाशुरम 33, 45, 46, 53, 54, 72 और 75 में आल्वार वेंगडम का उल्लेख और गायन करते हैं। उनमें स्पष्ट उद्घोषित है कि वेंकटाद्रि पर तुलसी मालाधारी सर्वेश्वर रहते हैं। उनका ध्यान और मनन वे करते हैं। अपने मन से उन्हें स्वीकार किया है और उनका अनवरत ध्यान करने का निर्णय लिया है। उनका शरीर उनके सामने प्रणमित होता है और जिह्वा उनके पवित्र गुणों को रटती रहती है। उनका विश्वास है कि जो उस भगवान के पदकमल पर विश्वास रखेगा और उनका नाम स्मरण करेगा उसे किसी प्रकार की कमी नहीं होगी। तपस्वी समुदाय वेंगडम् पर भगवान की अनवरत तपस्या में लीन रहता है। पाशुरम 72 द्वारा आल्वार अपने मस्तिष्क से अनुरोध करते हैं कि वेंकटाद्रिवास श्री वेंकटेश पर लगकर ध्यान रत रहे। वे कहते हैं कि वहाँ पर रहनेवाला वानर समूह भी वेंकटाद्रि पर पुष्पित फूलों का चयन कर भगवान के चरणों पर अर्पित करना चाहता है। भगवान की सेवा में अनवरत रहने का प्रयत्न करता है। पाशुरम 54 में पूदत्त आल्वार भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे तिरुमालिरुंशोलै और वेंगडम् को अपना स्थिर वास बनाने के बावजूद क्षीरसागर को न भूलें और उनके (आल्वार के) हृदय में भी रहना न भूलें। क्योंकि उनका अधिवास स्थान क्षीरसागर और भक्तों के हृदय ही हैं।

[[इस पाशुरम में आल्वार जी अपने हृदय को 'उळन्-कोयिल' या 'उळन्-कोयिल' और क्षीरसागर को ''वेळ्ळम्-इळन् - कोयिल''। उळन् - कोयिल उनके हृदय को सूचित करता है और वही आध्यात्मिक दृष्टि से भगवान का निवास भी है। (उळन् का अर्थ हृदय है) इळन् - कोयिल साधारणतः बालालयम् (= छोटा मंदिर = नया मंदिर) माना जाता है। सागर निस्संदेह उनका, महाप्रलय के समय का, वास स्थान है। यह भगवान का महाप्रलय के बाद का अस्थायी निवास है और पुनःसृष्टि के बाद भगवान के अनेक मंदिर बने (बनाये गये) हैं।]]

पूदत्ताल्वार भगवान वेंगडत्तान (वेंकटेश्वर) के संबन्ध में स्पष्ट करते हैं कि उनके सामने देवता समूह प्रणमित होता है। देवताओं के मुकुट उनके पद तल पर झुके रहने से उनके मुकुटों की नीलमणियों का प्रकाश भगवान के शरीर पर पडकर उनकी शोभा और बढ़ाती है। वेंगडम् को बाँसों की झाडियों, सरसियों और झरियों से मंडित तथा हाथियों से भरा हुआ पहाड कहते हैं। बाँसों की मृदु कोंपलों को खानेवाले हाथियों का वर्णन करते हैं। हाथी बाँसों की कोमल पत्तियों को शहद में मिलाकर हथिनियों को खिलाते हुए भी दिखाया गया है।

आल्वार जी वेंकटेश्वर को राम, कृष्ण, विष्णु बताते हैं और साथ-साथ श्रीरंगम, तिरुकोट्टियूर, तिरुमलै और तिरुमालिरुंशोलै के भगवान भी बताते हैं।

डॉ.यस.के.अय्यंगार पाशुरम 60 के बारे में अपनी पुस्तक ''हिस्टरी ऑफ तिरुपति'' (पृ.71) में कहते हैं कि इसमें भगवान को दो रूपों में दिखाया गया है। दोनों में से एक दूसरे का गौण रूप है। इनमें पहला शिव और ब्रह्म मिलकर विष्णु का रूप माना जाता है। इसे पोय्गै और नम्माल्वार प्रतिपादित करते हैं। व्याख्याताओं से यह पाशुरम सामान्य रूप से विश्लेषित है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भूतत् आल्वार, पोय्गै आल्वार से किसी भी मात्रा में भक्ति में कम नहीं है और मानते हैं कि तिरुपति के स्वामी विष्णु मूर्ति ही हैं, चाहे उनके कुछ संकेत शिव से संबन्धित ही क्यों न हो। प्रथम वीक्षण में चाहे वे इस प्रकार लगे, पर मूर्ति विष्णु की मूर्ति ही है।

क्रमशः

(गतांक से)

अवधूत उपाख्यान

- श्री ब्रह्मानन्द प्रधान

चतुर्थ गुरु

चौथा गुरु है जल। जल से यह शिक्षा ग्रहण की है की -

स्वच्छ प्रकृतितः स्निग्धो माधुर्यस्तीर्थभूर्नृणाम्।

मुनिः पुनात्यपां मित्रमीक्षोपस्पर्शकीर्तनैः।।

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 44)

जिस प्रकार जल स्वभाव से ही स्वच्छ है, चिकना, मधुर और पवित्र होता है। वैसे ही साधक को भी स्वभाव से स्वच्छ, स्निग्ध, मधुरभाषी, लोकपावन होना चाहिए।

पञ्चम गुरु

दत्तात्रेय जी का पांचवा गुरु है अग्नि। अग्नि से उन्होंने यह शिक्षा ग्रहण की है-

तेजस्वी तपसा दीप्तो दुर्धर्षोदरभाजनः।

सर्वभक्षोऽपि युक्तात्मा नादत्ते मलमग्निवत्।।

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 45)

जिस तरह से अग्नि तेजस्वी और ज्योतिर्मय होता है, उसको कोई दबा नहीं सकता है, सभी वस्तुओं को अपने में समाहित कर लेने पर भी उन वस्तुओं से लिप्त नहीं होता है। उसी तरह साधकों को परम तेजस्वी, तपस्या से देदीप्यमान, इंद्रियों से अपराभूत होकर यथायोग्य विषयों का उपभोग करता हुआ किसी से लिप्त नहीं होना चाहिए।

षष्ठ गुरु

छठवां गुरु है चन्द्रमा। उससे यह शिक्षा प्राप्त की है -

विगर्गाद्या श्मशानान्ता भावा देहस्य नात्मनः।
कलानामिव चन्द्रस्य कालेनाव्यक्तवर्त्मना।।

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 48)

काल की प्रभाव से चन्द्रमा की कलाएँ घटती बढती रहती है, तथापि चंद्रमा चन्द्रमा ही रहती है। उसी तरह जन्म से मृत्यु पर्यन्त जितनी भी अवस्थाएँ होती है सभी शरीर की होती है, आत्मा से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः साधक को आत्मभाव से रहना चाहिए।

सप्तम गुरु

दत्तात्रेय जी का सांतवा गुरु है सूर्य। उनसे यह शिक्षा प्राप्त की है -

गुणैर्गुणानुपादत्ते यथाकालं विमुञ्चति।
न तेषु युज्यते योगी गोभिर्गा इव गोपतिः।।

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 49)

जैसे सूर्य अपने किरणों से पृथ्वी का जल को खींचता है और समय आने पर बरसा देता है, वैसे ही साधकों को विषयों का ग्रहण करना चाहिए और समय आने पर उनका त्याग कर देना चाहिए। किसी भी समय साधक को इंद्रिय के किसी भी विषय में आसक्ति नहीं होना चाहिए।

अष्टम गुरु

दत्तात्रेय जी ने आंठवे गुरु के रूप में कबूतर को स्वीकार किया है, और उनसे यह शिक्षा ग्रहण की है -

नातिस्नेहः प्रसङ्गो वा कर्तव्यः क्वापि केनचित्।
कुर्वन् विन्देत सन्तापं कपोत इव दीनधीः॥

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 52)

कहीं किसी के साथ अत्यन्त स्नेह अथवा आसक्ति नहीं करनी चाहिए, अन्यथा बुद्धि अपनी स्वातन्त्र्य खोकर दीन हो जायेगी और कबूतर की तरह संतापग्रस्त हो जाएगा। अतः साधक को आसक्ति रहित होकर रहना चाहिए।

किसी एक अरण्य में एक कबूतर रहता था। उसने एक पेड पर अपना घोसला बना रक्खा था। कबूतरी के साथ वह कई वर्षों तक उस घोसले में रहा। उन दोनों में परस्पर स्नेह की वृद्धि हुई। परस्पर इतने आसक्त हो गये की एक दूसरे के दृष्टि से दृष्टि अंग से अंग और बुद्धि से बुद्धि को बांध रखा था। परस्पर इतना प्रेम और विश्वास था की निःसंदेह होकर दोनों एक साथ खाते-पीते, घूमते-फिरते थे। कबूतर कबूतरी की सारी कामनाएँ पूर्ण करता था और कबूतरी भी पति की इच्छाएँ पूरा करती थी। समय आने पर कबूतरी गर्भ धारण की और वह अण्डे दिये और भगवान की अचिन्त्य शक्ति से बच्चे भी फूट कर निकल गये। उन बच्चों के लालन-पालन में दोनों अत्यन्त मोहित होकर परस्पर रहने लगे। एक दिन दोनों बच्चों के लिए चारा लाने को जंगल में गये हुए थे। इधर एक शिकारी संयोगवश उनके घोंसले के पास आ पहुँचा। उसने देखा की कबूतर के बच्चे फूदक रहे हैं, और उसने जाल फैलाकर उन्हें पकड लिया। दोनों जब चारा लेकर घोसले के पास आये तब देखे की बच्चे जाल में बन्धे हुए है।

यह देख कबूतरी की हृदय दुःख से भर गयी और वह भी स्वयं ही जाल में जाकर फंस गयी। यह देखर कबूतर अत्यन्त विषादग्रस्त हो गया। वह सोचने लगा और विलाप करने लगा। वह यह सोचने लगा की मैं अभागा हूँ, दुर्मति हूँ। मेरा धर्म, अर्थ, काम का मूल यह गृहस्थाश्रम ही नष्ट हो गया। मेरी प्राणप्रिया जो मुझे ही इष्टदेव समझती थी, वह मुझे छोडकर निश्चल बच्चों के साथ स्वर्ग जा रही है। मेरा संसार में कोई काम नहीं रहा, विधूर जीवन मेरा मूल्यहीन है ऐसा सोचकर अपने परिवार को मृत्यु रूप जाल पडा हुआ देख के भी मूर्ख कबूतर जाल में जा गिरा। वह व्याध क्रूर था, वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और कबूतर की पूरे परिवार लेकर चलता बना। जो कुटुम्बी विषयों और लोगों के सांगत्य के साथ ही जिसे सुख प्राप्त होता है, उनके भरण पोषण में ही अपना सुध बुध खो बैठता है, उसे कभी शान्ति नहीं मिलती है। उसी कबूतर की तरह विनाश को प्राप्त होता है। यह मनुष्य शरीर मुक्ति का खुला हुआ द्वार है। इसे पाकर भी जो कबूतर की तरह अपनी घर गृहस्थी में फंसा हुआ है वह कबूतर की तरह विनाश को प्राप्त होगा। अतः साधक को प्रत्येक मनुष्य आरूढच्युत न होकर मुक्तिभाव से जीवन व्यतीत करना चाहिए। इसमें दत्तात्रेय जी के चौबीस गुरुओं में से प्रथम आठ गुरुओं के विषय में वर्णन किया गया है।

(समाप्त)

सितंबर-2024 महीने का क्विज-26 के समाधान

1) पार्वती-परमेश्वर, 2) वामन अवतार

3) हिडिंबा, 4) कमलपालिका,

5) घटोत्कच, 6) ऐरावत, 7) वज्रायुध,

8) ध्रुव, 9) उत्तानपाद,

10) कल्याण विमान, 11) निलमंगैतायार,

12) योगनरसिंहर,

13) भाद्रपद, शुक्ल चतुर्दशी के दिन,

14) शुक्राचार्य, 15) उत्तम.

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

चतुर्थ आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

वृषभासुर से वराह देव (नृसिंह) का युद्ध :

इस प्रकार विष्णु देव और वृषभासुर दोनों आकाश में उड कर, फिर धरती पर उतर कर सिंहों के रूप में युद्ध करने लगे। अत्यंत रोष और क्रोध के साथ एक दूसरे से युद्ध करने लगे। गदा, कुंत, मुसल, मुद्गर, शूल, खिंडी आदि विविध आयुधों को एक दूसरे पर फेंकते दोनों ने घमासान युद्ध किया। उन के इस भीकर युद्ध से धरती कांपने लगी। दौडते, गिरते-उठते, थकते, बिजलियाँ गिराते, अट्टहास करते, हाहाकार करते, एक दूसरे को ढकेलते, एक दूसरे का परिहास करते, नखों से एक दूसरे को घायल करते, चीकते-चिल्लाते लोक भीकर रूप में युद्ध करते रहे। अनेक गंड शूलों को एक दूसरे पर फेंका। गंड शूलों से धरती भर गयी। गंड शूलों के गिरने से बडे-बडे पत्थर भी टूट कर नष्ट हो गए। पहाडों पर दोनों उत्साह से उडते, लांघते युद्ध करने लगे। इस रूप में काफी समय तक उन दोनों ने युद्ध किया। अवसान के समय जैसे दीप अधिक प्रज्वलित होता है उसी रूप में वृषभासुर अति बल से प्रचंड होकर नृसिंह को अतिशय ढंग से निगलने के लिए तैयार हो गया। आकाश में देवतागण नरहरि की विजय की कामना कर रहे थे। तब वे महापुरुष उत्साह के साथ अपने शरीर को बढा कर हांफते तुरंत गरुडवाहन पर चढ कर अपने सहस्र करों में सहस्र आयुध धारण करके राक्षस पर गिर कर उसे पकडने की कोशिश की। तब राक्षस ने उन की पकड में न आकर यहाँ-वहाँ भागते, अखंडादि, निर्जर, भ्रांतिमान अपने मायाजाल से खग वाहन पर बैठ कर, सहस्र भुज और सहस्र आयुध धारण करके, कृत्रिम विष्णु बनाकर उसे नारसिंह पर छोडा। तब माया विष्णु और नरसिंह के बीच में युद्ध हुआ। तुरंत नारसिंह ने कृत्रिम विष्णु रूप को पहचान लिया। उसे राक्षस माया समझ कर अपनी माया शक्ति को बढाया। राक्षस निर्मित माया विष्णु को चक्री ने अदृश्य कर दिया। फिर हँसते हुए इस रूप में कहा। ‘‘हे चपल राक्षस! तुझे स्वयं सृजन करके युद्ध करने की जरूरत से तुझ से युद्ध किया। मुझ से युद्ध करने में तुम्हारा बल ही क्या है? मुझे लेकर जप करने के कारण तुझ पर दया करके अब तक नहीं मारा। अब मैं सहन नहीं कर सकता। क्योंकि तुम ने माया विष्णु को सृजन करके मुझ पर छोडा। उस

के बारे में मुझे पता चल गया। तुम अब कहाँ छिपोगे? देखो! मेरे साहस को देखो। सकल शत्रु भीकर मेरा चक्र की अग्नि में तुम्हारा शीर्ष कटकर जल जायेगा। ऐसा नहीं करूँगा तो मैं धरती पर नारसिंह नहीं कहलाऊँगा।''

वृषभासुर के द्वारा स्वामी की स्तुति करना :

कहते प्रतिज्ञा करके चक्र को धारण करनेवाले नारसिंह को देखकर वृषभासुर ने परिशुद्ध होकर भक्ति से नारसिंह के पाद युगल पर गिर कर शरणागति ली। आगे इस रूप में कहा। ''हे देव! आप के चक्र के प्रभाव के बारे में बताना ब्रह्मादि देवताओं के लिए भी संभव नहीं है। कीर्तिमान अंबरीषादि प्रमुखों को इसी चक्र ने विजय प्रदान की। उससे अलग माना जाता है कि आप के चक्र से मरने से पुनर्जन्म नहीं होता है। इसलिए ऐसे शक्तिवान चक्र से कट कर मुक्ति को प्राप्त करूँगा। कृपया इस पर्वत को मेरा नाम रख दीजिए।'' यह सुन कर स्वामी प्रसन्न होकर उस की प्रशंसा करते हुए उसे आलिंगन बद्ध किया। उसे मोक्ष भी प्रदान किया। यह वर भी दिया कि कृतयुग में यह पर्वत वृषाभाद्री के रूप में प्रचलित होगा। तब उस स्वामी के सिर पर देवताओं ने आकाश से फूलों की वर्षा की। देवतागण उन्हें नमन करके अपने निजी स्थल लौट गए। तदुपरांत राक्षस के भय से गुफा में रहनेवाले मुनिगण बाहर आकर श्रीहरि की स्तुति करने पर ''आप अब निर्भय होकर यहाँ पर रह सकते हैं।'' ऐसी आज्ञा देकर वराहस्वामी अदृश्य हो गए। वे भूदेवी समेत इच्छा विहार करने लगे। ऐसा बतानेवाले शतानंद को देखकर जनक ने इस रूप में कहा।

अंजनाचल (त्रेतायुग) :

''हे मुनिनाथ! वृषभाद्री पर्वत को अंजनाद्री नाम कैसे पडा?'' कहने पर शतानंद ने इस रूप में कहा। ''केसरी नामक एक वानर की पत्नी को संतान नहीं थी। उसने मतंग ऋषि के पास जाकर नमस्कार करके कहा। 'हे मुनिवर्य! पुत्रहीन को पुण्यगति प्राप्त नहीं होती है, ऐसा वेद पुरुषों ने कहा है। इसलिए मुझे पुत्र संतान चाहिए। उस के लिए मैं तप करना चाहती हूँ। आप आज्ञा दीजिए।' ऐसी प्रार्थना करने पर अंजनादेवी से उस मुनि ने इस रूप में कहा। 'हे देवी! यहाँ से पंपा नदी के पूरब में जाने से पचास योजनाओं की दूरी पर नृसिंह आश्रम नाम से एक स्थल है। उस के पश्चिम भाग में प्रकाशवान नारायणाद्री प्रदेश में परम पवित्र श्री स्वामिपुष्करिणी के उत्तर में एक क्रोस दूरी पर आकाशगंगा नामक एक प्रवाह है। तुम वहाँ जाकर त्रिकालों में स्नान करते हुए द्वादशाब्धों तक तप करो। तब तुझे पुत्र संतान होगी।' उसे 'महाप्रसाद' कहते अंजनादेवी मुनि को नमस्कार करके उनकी आज्ञा लेकर नारायणाद्री पहुँच गयी। वहाँ श्री स्वामिपुष्करिणी में स्नान करके उस के तटपर रहनेवाले वृक्षों की परिक्रमा करके, वराहस्वामी के दर्शन करके उन की पूजा करके वहाँ से आकाशगंगा पहुँच गयी। वहाँ रहनेवाले मुनियों को नमस्कार करके उन से अनुमति प्राप्त करके आकाशगंगा में

त्रिकालों में स्नान करते हुए निराहारी होकर अंजनादेवी ने एक वर्ष तप किया। तब वायुदेव प्रसन्न होकर उन्हें प्रत्यक्ष हुए। प्रत्येक दिन वे एक फल अंजनादेवी को देते रहे। उन फलों को खाते अंजनादेवी ने द्वादश वर्षों तक तप किया। तब एक दिन पवन देव ने सद्वीर्य एक मधुर फल अंजनादेवी को दिया। अंजनादेवी ने उस फल को खाकर गर्भ धारण किया। एक दिन संयमींद्र मुनि को स्वप्न में दिखाई दिया कि पवन देव ने अंजनादेवी के गर्भ में प्रवेश किया है। तब उन का संशय दूर हो गया।''

हनुमान का जन्म :

दस महीने बीत गए। तब धरती पर अंजनादेवी के गर्भ से एक महान पुत्र का जन्म हुआ। यह देख कर देवतागण ने संतोष के साथ फूलों की वर्षा की। घन वज्रांग, दीर्घ वाल, लसत्कांति, बल-स्थैर्य के साथ बालक को देखकर मुनियों ने 'धरती पर यह आंजनेय(हनुमान) महा मुख्य होंगे।' ऐसा आशीर्वाद दिया। साथ ही मारुताज्मा पर आसक्त होते सब मिल कर अत्यंत उत्साह और आह्लाद से उन्हें हनुमान नामकरण किया। त्रेतायुग में अंजनादेवी ने इस रूप में तप करके पुत्रवती होने के निमित्त से इस पर्वत का नाम अंजनाद्री के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इस से अलग।

शेषशैल (द्वापरयुग) :

उरगपति शेष और वायुदेव के बीच की होड में शेष हार गया। उस शेष ने कनकगिरि पुत्र वेंकटेश के साथ द्वापरयुग में धरती पर शैल के रूप को प्राप्त किया। इसलिए इसका नाम शेषाद्री पड गया। यह सुन कर जनक ने इस रूप में कहा। 'शेष क्यों पवन के साथ लडे? मेरी जानकारी के लिए बताइए।' कहने पर शतानंद ने इस रूप में कहा। हरि को देखने एक दिन वायु देव वैकुंठ गए।

शेष मारुत संवाद :

हरिवास मंदिर के द्वार पर रखवाली करनेवाले शेष ने पवन को देखकर इस रूप में कहा। 'हे वातुल! तुम अंदर मत जाओ। यहीं पर रुक जाओ।' ऐसा निष्ठूर रूप से कहने पर पवन ने इस रूप में कहा। 'मैं कमलाक्ष! को देखने जा रहा हूँ। ऐसे मुझे रोक रहे हो। तुम कैसे मुझ से बडे हो। मैं तुम से किस में छोटा हूँ। रमापति को मुझे इसी समय देखना है। मेरे रास्ते में मत आओ।' कहते अंदर घुस जाने की कोशिश की। ऐसे पवन को देखकर शेष फुफकारते हुए उठ कर आंखें लाल करके शेष ने उसे गला पकड कर बहार ढकेल दिया। अपने को गला पकड कर बाहर निकालने से पवन को बहुत रोष हुआ। पवन ने तब अपनी शक्ति को बढाते अट्टाहास करते हुए शेष को देखकर इस रूप में कहा। 'मुझे गला पकड कर निकाल दिया तुम ने हे नाग कुलाधम! अगर मैं ढकेल दूंगा तो तुम को ठिकाना नहीं होगा। छी! यहाँ से चले जाओ!' तब शेष ने इस रूप में कहा।

'हे पवन! सुनो। अंतःपुर के लिए तुम नये हो। मैं पहले जाकर चक्री से तुम्हारे आगमन के बारे में बताऊँगा। अगर दया से विष्णु तुम को अंदर बुलायेंगे तो तुम्हें अंदर ले जाऊँगा।। इससे अलग तुम्हें आगे जाने नहीं दूंगा।' यह सुन कर पवन ने कहा। 'अंतःपुर में हमेशा मार्जाल रहता है। हाथी हमेशा बाहर ही रहता है। इसलिए क्या हाथ तुच्छ है? दूध पीनेवाले बिल्ली मंदिर में ही रहती है। इतने मात्र से बिल्ली क्या हाथी से बडा हो जाएगी? अब तुम ने मुझे अंदर जाने नहीं दिया। मैं वहाँ अब नहीं आऊंगा। तुम वहाँ रहो। मैं यहाँ रहूँगा। कोई झगडा नहीं है। जाओ! हे भुजंगाधम! तुम मत फूलो।! कहते इस रूप में शेष का अपमान करनेवाले पवन को देखकर शेष ने इस रूप में कहा।' 'हे मारुत! सदा मेरे आहार बननेवाले तुम गर्व करते रहते हो। मेरे सामने तुम्हारा उत्कर्ष नहीं चलेगा।' सुन कर पवन ने गुस्सा करते हुए इस रूप में कहा। 'हे शेष! गर्व से दुर्भाष्य कर रहे हो। अनावश्यक रूप से मुझे गुस्सैल कर रहे हो। तुम्हारा किस विषय में विशेष महत्व है? फिर भी सुनो। मेरे बल के सामने तुम्हारा बल हाथी-चींटी के समान है। वह ऐसा है कि मैं सर्व जीवांतर्यामी के रूप में रहता हूँ। मैं जगत का आधार बन कर रहता हूँ। इसलिए मैं तुम से बडा हूँ।' यह सुन कर शेष ने कहा। 'हे प्रभंजन! सुनो। मैं सारे प्राणियों के होनेवाले विपुल धरती को अपने सिर पर ढोता हूँ। बहुविध ब्रह्मांड भांडोदर विष्णु को मैं अपने पर रखता हूँ। इसलिए मैं ही तुम से बडा हूँ। मुझे तुच्छ के रूप में मत देखो। यहाँ से चले जाओ।' सुन कर क्रोधित पवन ने इस रूप में कहा। 'हे पन्नगेंद्र! मैं तुम्हारे अंदर हूँ। इसलिए तुम शक्तिमान बने हो। अगर मैं अंदर नहीं रहता हूँ तो तुम्हारे बल को क्या होगा? मैं ही मूल तत्व हूँ। तुम मुझ से तुच्छ हो।' इस रूप में पवन के कहने पर सुनकर पन्नगेंद्र ने इस रूप में कहा। 'हे वातुल! सुनो। व्यर्थ ही क्यों बातों से लडेंगे। इससे अच्छा है कि हम दोनों दो ओर खडे होकर एक दूसरे से कुश्ती करेंगे। तब सब को मालूम हो जाएगा कि कौन बलवान है। आओ।' इस रूप में खगेंद्र को ललकारने लगा। तब इस कोलाहल को सुन कर विष्णु बाहर चले आये। तब शेष और पवन दोनों ने चक्री को देख कर श्रद्धा से नमस्कार किया। दोनों अपने झगडे के बारे में हरि को बताया। 'हे देव! हम दोनों एक दूसरे से लडना चाहते हैं। आप आशीर्वाद देकर आज्ञा दीजिए।' पवन और शेष की इन बातों को सुनकर विनोद करने के लिए विष्णु उन को शांत किए बिना उन दोनों के इस रूप में व्यवहार करने के मूल कारण को जान कर, इससे जगत को होनेवाले हित के बारे में जान कर उन के रोषावेश को और बढाया।

क्रमशः

जैसा कि कहावत है 'मानव सेवा, माधव सेवा', तिरुमल तिरुपति देवस्थान (ति.ति.दे.) श्री वेंकटेश्वर के निवास स्थान पर आने वाले सामान्य तीर्थयात्री को मुफ्त दर्शन, भोजन, पेयजल, यात्रा और मुंडन जैसी बुनियादी सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

ति.ति.दे. द्वारा पहाड़ी मंदिर में आने वाले हजारों तीर्थयात्रियों के लाभ के लिए कई सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। औसतन हर दिन 60000 से 80000 भक्तलोग स्वामीजी का दर्शन करते हैं, जिसके लिए प्रभावी भीड़ प्रबंधन तंत्र और बिना किसी परेशानी के टोकन आबंटन प्रणाली की आवश्यकता होती है, जिसमें टी.टी.डी. ने प्रभावी रूप से महारत हासिल किया है।

जबकि अन्य मंदिरों में भक्तों के लिए केवल कुछ विकल्प होंगे, टी.टी.डी. को अलग करने वाला मुख्य कारक दर्शन के लिए चुनने के लिए विकल्पों की बड़ी संख्या है।

वास्तव में, एक भक्त जो तिरुमल की पवित्र यात्रा पर निकलता है, वह खाली जेब के साथ शुरू कर सकता है और तिरुपति बस स्टेशन/रेल्वे स्टेशन से तिरुमल और वापस आने के दौरान एक भी रुपया खर्च करने की आवश्यकता नहीं है। बेशक, भक्त को कमरे/लॉकर के लिए सुरक्षा जमा राशि का कुछ न्यूनतम राशि ले जानी होगी, जो कि खाली करते समय वापस कर दी जाएगी।

इसका मतलब है, कुछ भक्तगण पैदल मार्ग में और कुछ लोग घाडी या बस पर यात्रा के लिए निकलता

तिरुमल दर्शन

ति.ति.दे. द्वारा दी जाने वाली एक परेशानी मुक्त, अद्वितीय सुविधा

मूल लेखक - श्री अत्ति रंगराजन
अनुवादक - डॉ.बी.एन.नीलिमा

है, तो टी.टी.डी. प्रबंधन तीर्थयात्रियों की सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखता है।

एस.एस.डी. (सर्वदर्शन)

एक भक्त के लिए दर्शन के लिए कई विकल्प हैं। अधिकांश भक्तों द्वारा चुना गया पहला विकल्प एस.एस.डी. (स्लॉटिड सर्वदर्शन) टोकन है, जो तिरुमल में भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए मुफ्त में आबंटित किए जाते हैं।

अधिकांश भक्त जो तिरुपति पर अनियोजित यात्रा पर आते हैं, वे श्रीनिवासम् (यात्री आवास समुदाय केंद्र) (आर.टी.सी. बस स्टेशन के सामने); विष्णुनिवासम् (रेल्वे स्टेशन के सामने) और भूदेवी कांप्लेक्स (अलिपिरि लिंक बस स्टेशन) में काउंटरों पर एस.एस.डी. टोकन प्राप्त कर सकते हैं। समय स्लॉट के आधार पर, वे निर्धारित समय पर तिरुमल पहुँच सकते हैं और भगवान श्रीनिवास का दर्शन कर सकते हैं।

अनुसूचित सर्वदर्शन उन भक्तों के लिए भी उपलब्ध है जो न तो अपनी योजना बनाते हैं और न ही अपने एस.एस.डी. स्लॉट की बुकिंग करते हैं। ऐसे भक्तों को नियमित अंतराल पर क्यू-कांप्लेक्स में प्रवेश करने की अनुमति दी जाएगी, लेकिन प्राथमिकता उन लोगों को दी जाएगी जिन्होंने दर्शन या सेवाओं की बुकिंग की है।

एस.ई.डी. (विशेष प्रवेश दर्शन)

दूसरा प्रमुख विकल्प जो भक्तों द्वारा उपयोग किया जाता है वह है एस.ई.डी. (विशेष प्रवेश दर्शन) टिकट। ये टिकट ऑनलाइन 300 रुपये प्रति व्यक्ति के भुगतान पर बुक किए जा सकते हैं। यह टिकट मध्यवर्गीय भक्तों के लिए सबसे सस्ता है जो अपने यात्रा कार्यक्रम के अनुसार तिरुमल जाने का इरादा रखते हैं और जो अपनी यात्रा योजना के अनुसार चलना चाहते हैं।

दिव्यदर्शन (पैदल मार्ग)

'दिव्यदर्शन' एक और प्रारूप है जो उन भक्तों के लिए उपयोगी है जिन्होंने पहाड़ियों पर चढ़ाई करने का संकल्प लिया है। तिरुमल पहुँचने वाले भक्तों का एक बड़ा हिस्सा पैदल आता है, जिसे वे मानते हैं कि इससे वे भगवान वेंकटेश्वर के करीब आएँगे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

चूंकि पहाड़ियों पर चढ़ाई करने में थकान और थकावट होती है, ऐसे भक्तों के लिए क्यू-कांप्लेक्स में लंबे समय तक खड़े रहना मुश्किल हो जाता है। उनके तनाव को कम करने के इरादे से, टी.टी.डी. प्रबंधन इन 'दिव्यदर्शन' टिकटों की पेशकश कर रहा है ताकि तीर्थयात्रियों को पहाड़ियों पर चढ़ाई करने में राहत मिल सके।

पैदल यात्री के भक्तों को इन टिकटों को पहाड़ी के नीचे जारी कराना होगा और दोनों पैदल मार्गों, अर्थात् अलिपिरि और श्रीवारिमेट्टु पैदल मार्ग में एक निर्धारित केंद्र पर टिकटों को जांच या स्कॅनिंग कराना होगा। यह कुछ लोगों द्वारा लाभ उठाने से रोकने के लिए है जो वास्तव में पहाड़ियों पर पैदल यात्रा किए बिना लाभ प्राप्त करने की कोशिश कर सकते हैं।

अभी श्रीवारिमेट्टु पैदल मार्ग में टिकट जारी कर रही है। आगे भविष्यत काल में अलिपिरि में भी टिकट देने का प्रयत्न कर रही है।

श्रीवानी टिकट

ति.ति.दे. उन लोगों को दर्शन में प्राथमिकता देता है जो श्री वेंकटेश्वर मंदिर निर्माण (श्रीवानी ट्रस्ट) को दान करते हैं, जिसे भारत भर में श्री वेंकटेश्वर मंदिरों के निर्माण और रखरखाव के उद्देश्य से बनाया गया है। यह ट्रस्ट विभिन्न त्योहारों और धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन का भी समर्थन करता है, इसके अलावा गोपुरम और पुरातात्त्विक भवनों की मरम्मत, नवीनीकरण, रखरखाव और संरक्षण का कार्य भी करता है, जो भारतीय संस्कृति की महिमा को दर्शाते हैं।

एक प्रशंसा के प्रतीक के रूप में, जो दानदाता श्रीवानी ट्रस्ट को 10000 रुपये या उससे अधिक का योगदान करते हैं, उनके द्वारा प्रदर्शित प्रतिबद्धता के लिए, टी.टी.डी. एक बार का वी.आई.पी. ब्रेक दर्शन का विशेषाधिकार प्रदान करता है, जिसकी अतिरिक्त लागत 500 रुपये है।

वरिष्ठ नागरिक और विशेष रूप से सक्षम लोग

विशेष चिंता के तहत उम्र और शारीरिक विकलांगता को ध्यान में रखते हुए, टी.टी.डी. वरिष्ठ नागरिकों और विशेष रूप से सक्षम व्यक्तियों को क्यू-कांप्लेक्स में एक अलग स्लॉट प्रदान करके विशेष सुविधा देता है, ताकि उन्हें सामान्य भीड़ के साथ धक्का-मुक्की का सामना न करना पड़े। ऐसे लोग टी.टी.डी. की वेबसाइट 'www.ttdevasthanams.ap.gov.in' पर 'वरिष्ठ नागरिक/विशेष रूप से सक्षम/चिकित्सा मामलों' के तहत टिकट बुक करके भगवान वेंकटेश्वर का दर्शन कर सकते हैं।

वरिष्ठ नागरिक को 65 वर्ष की आयु पूरी करनी चाहिए और उनके साथी को सहायक के रूप में अनुमति दी जाती है। इसी तरह, विकलांग व्यक्ति के पास राज्य या केंद्रीय सरकार द्वारा प्रदान किया गया प्रमाण पत्र होना

चाहिए, और उनके साथी को सहायक के रूप में साथ आने की अनुमति होगी।

विशेष चिकित्सा स्थितियों वाले लोगों को विशेष सुविधा के रूप में, टी.टी.डी. उन लोगों को अनुमति देता है जिन्होंने किडनी प्रत्यारोपण, ओपन हार्ट सर्जरी, डायलिसिस, लिवर ट्रांसप्लांटेशन, मस्तिष्क सर्जरी, कैंसर या रीढ़ की सर्जरी (चलने में असमर्थ) करवाई है या करवा रहे हैं। ऐसे मामलों को संबंधित सर्जन या विशेषज्ञ से एक चिकित्सा प्रमाण पत्र लाना चाहिए। उनके पति/पत्नी को सहायक के रूप में अनुमति दी जाएगी।

सभी उपरोक्त मामलों में, सोमवार से शनिवार तक प्रति दिन 3 बजे अधिकतम 1000 व्यक्तियों को अनुमति दी जाएगी।

श्रीनिवास दिव्य अनुग्रह होमम्

हाल ही में प्रारंभ किया गया 'श्रीनिवास दिव्य अनुग्रह होमम्' अलिपिरि गोशाला में भक्तों के लिए एक और दर्शन का अवसर प्रदान करता है।

होमम् का आयोजन टी.टी.डी. द्वारा विश्व कल्याण और सभी मानवों की सामान्य समृद्धि के लिए किया जाता है। श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय को इस अनुष्ठान को करने के लिए योग्य और कुशल मानव संसाधन प्रदान करने का कार्य सौंपा गया है। जो लोग होमम् में भाग लेना

चाहते हैं, वे प्रति युगल 1000 रुपये का भुगतान करके ऐसा कर सकते हैं, जिसके लिए उन्हें एस.ई.डी. टिकटों के लिए निर्धारित क्यू-कांप्लेक्स के माध्यम से प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। एक व्यक्ति के लिए 300 रुपये टिकट (एस.ई.डी. टिकट) खरीदने पर दर्शन उपलब्ध होता है।

होमम् दिन-ब-दिन लोकप्रिय हो रहा है और न केवल श्रीनिवास की दिव्य कृपा प्राप्त करने के लिए, बल्कि तिरुमल दर्शन के एक विश्वासनीय साधन के रूप में इसकी लोकप्रियता के कारण भी इसे भारी प्रतिक्रिया मिल रही है।

श्रीवारि सेवक / परकामणी सेवा

टी.टी.डी. जनता को भक्तों की सेवा करने के लिए स्वैच्छिक सेवा देने के लिए आमंत्रित करता है और उन्हें मंदिर के अंदर और बाहर कई गतिविधियों में शामिल करता है, जैसे कि क्यू-कांप्लेक्स को बनाए रखना, सतर्कता, स्वास्थ्य, अन्नप्रसाद वितरण, बागवानी, चिकित्सा, परिवहन, कल्याणकट्टा, पुस्तक स्टॉल आदि।

इसी तरह, जो लोग 'परकामणी सेवा' माने श्रीहरि हुंडी में गिराए गए मुद्रा और सिक्कों की गिनती की निगरानी के लिए स्वेच्छा से काम करेंगे, उन्हें भी दर्शन का अवसर मिलेगा।

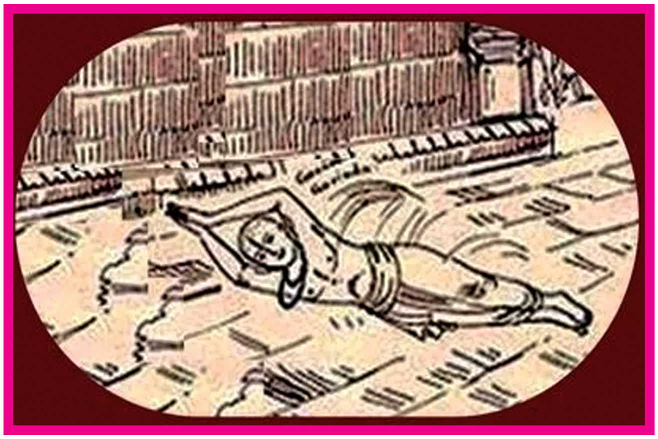

अंगप्रदक्षिणम

अंगप्रदक्षिणम वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने शरीर को 'प्राकारम' के चारों ओर घुमाता है। यह एक सदियों पुरानी प्रथा है, जो सात पहाड़ियों के भगवान को प्रसन्न करने के लिए की जाती है।

यात्री अंगप्रदक्षिण करने के लिए https://ttdevasthanams.ap.gov.in/adp/login के माध्यम से पहले से टिकट बुक कर सकते हैं। इसके लिए, भक्तों को पहले श्रीस्वामिपुष्करिणी में स्नान करना चाहिए और गीले कपड़ों में मंदिर पहुँचना चाहिए। उन्हें इस उद्देश्य के लिए मंदिर में प्रवेश करने के लिए बुकिंग के समय दिए गए पहचान पत्र को प्रस्तुत करना होगा।

नन्हें शिशु के साथ माता-पिता का दर्शन :

एक साल के अंदर बाल-बच्चों का जन्म-पत्र (Birth Certificate) के साथ माता-पिता अपना आधार कार्ड ओरिजिनल और जिराक्स के प्रति को दिखाकर सुपथम् मार्ग के द्वारा दोपहर 12.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक दर्शन कर सकते हैं। कुछ विशेष संदर्भ और त्योहार के समयों में परिवर्तन होने की संभावना है।

यात्रियों के लिए सुविधाएँ

ति.ति.दे. तीर्थयात्रियों के लिए तिरुमल में विभिन्न सुविधाएँ प्रदान करता है। पीने के पानी से लेकर अन्नप्रसादम, शिशुओं के लिए गर्म दूध से लेकर वयस्कों के लिए नाश्ते, शौचालयों से लेकर लॉकरों तक, सब कुछ मुफ्त है। यात्रियों के लिए जो अपने दर्शन के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं, दूध और नाश्ता नियमित अंतराल पर प्रदान किया जाता है। यह उन्हें शांति बनाए रखने और अपने ठहरने के दौरान भगवान वेंकटेश्वर के पवित्र नामों का जाप करने में मदद करता है, बिना प्रतीक्षा समय की चिंता किए।

अन्नप्रसादम (भोजन) मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा अन्नप्रसाद केंद्र में दिन के अधिकांश समय पर परोसा जाता है। किसी भी तीर्थयात्री को भोजन खरीदने के लिए एक पैसा भी खर्च करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि टी.टी.डी. हर आने वाले भक्त को गर्मागर्म भोजन प्रदान करता है। भोजन की उच्च गुणवत्ता भक्तों से प्रशंसा प्राप्त करती है।

श्री टी.टी.देवस्थानम्स ऐप को https://play.google.com/store/apps/details?id=com.ttdapp इस लिंक के द्वारा डाउन-लोड कर सकते हैं।

इसी तरह, तीर्थयात्रियों को तिरुमल में अपने ठहरने के दौरान अपनी प्यास बुझाने के लिए पीने का पानी खरीदने की आवश्यकता नहीं है। रिवर्स ऑस्मोसिस (आर.ओ.) द्वारा उपचारित पानी तीर्थयात्रियों द्वारा पहाड़ियों पर देखे जाने वाले क्षेत्रों में नियमित अंतराल पर उपलब्ध कराया जाता है। सिर का मुंडन समय से पहले तिरुमल में एक व्रत के पालन के रूप में किया जाता है। बालों का अर्पण भगवान वेंकटेश्वर को सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक माना जाता है। इसलिए, भक्तों के लिए मुंडन मुफ्त में किया जाता है।

रोगियों के लिए जो तिरुमल की यात्रा कर रहे हैं और यात्रा के दौरान बीमार पड़ रहे हैं, अश्विनी अस्पताल और वैकुंठम क्यू कांप्लेक्स परिसर में एक मुफ्त आपातकालीन चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है। जिन्हें आपातकालीन और उच्च गुणवत्ता के उपचार की आवश्यकता होती है, उन्हें तिरुपति के नीचे भेजा जाता है। वास्तव में, ऐसी आपात स्थितियों का सामना करने के लिए दोनों घाट सड़कों पर एंबुलेंस तैयार रखी गई हैं।

पैदल यात्री के भक्त जो भारी सामान लाते हैं, उन्हें इसे पहाड़ियों तक शारीरिक रूप से ले जाने की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि टी.टी.डी. मुफ्त सामान परिवहन सेवा प्रदान करता है। एक बार जब सामान को पहाड़ियों के तल पर केंद्र को सौंप दिया जाता है, तो इसे सड़क द्वारा पहाड़ी की चोटी पर एक सामान स्थान पर ले जाया जाएगा, जहाँ पैदल यात्री अपने बैग ले सकते हैं। एक बार जब एक तीर्थयात्री बस स्टेशन या रेल्वे स्टेशन पर पहुँचता है, तो वहाँ मुफ्त बसें उपलब्ध होती हैं जो उन्हें अलिपिरि और श्रीवारिमेट्टु तक छोड़ देती हैं, जहाँ से वे पहाड़ियों पर चढ़ाई कर सकते हैं। इसी तरह, तिरुमल पहाड़ियों पर मुफ्त बसें लगातार चलती रहेंगी, जिन्हें तीर्थयात्री अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए उपयोग कर सकते हैं। तीर्थयात्रियों को केवल तभी भुगतान करना होगा जब वे घाट सड़क पर बस से यात्रा कर रहे हों। यात्रियों के लिए जो अपनी परिवहन से आ रहे हैं, टी.टी.डी. ने पहाड़ी शहर में कई पार्किंग स्थल विकसित किए हैं। पार्किंग स्थानों की योजना बनाई गई है और नियमित अंतराल पर उपलब्ध कराई गई है ताकि एक ही दिन में आने वाली हजारों कारों को आसानी से पार्क किया जा सके।

टी.टी.डी. ने वरिष्ठ नागरिकों और विकलांग व्यक्तियों के लिए मंदिर के चारों ओर घूमने के लिए बैटरी से चलने वाले वाहनों की व्यवस्था की है। ये वाहन वृद्ध और बीमार व्यक्तियों को कार पार्किंग से मंदिर के प्रवेश द्वार तक ले जाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। टी.टी.डी. ने एक मोबाइल ऐप प्रारंभ किया है, जो एक ही क्लिक में सभी सेवाओं की बुकिंग प्रदान करता है। तीर्थयात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे इस मुफ्त ऐप को डाउनलोड करें और कुछ ही मिनटों में सुविधाएँ प्राप्त करें।

तिरुमल की गतिशील स्थिति को देखते हुए, टी.टी.डी. द्वारा प्रदान की जाने वाली सभी सेवाएँ और सुविधाएँ अंतिम क्षण में बदल सकती हैं। तीर्थयात्रियों को यात्रा की योजना बनाने से पहले सेवाओं की जांच करने की सलाह दी जाती है।

यात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे तीर्थ यात्रा के लिए अपनी व्यवस्थाएँ पहले से ही कर लें और तिरुमल में उपलब्ध सभी सुविधाओं का उपयोग करें। संक्षेप में, तिरुमल की एक अच्छी तरह से योजनाबद्ध यात्रा हमेशा फलदायी, आरामदायक और संतोषजनक होती है...!

नवम्बर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

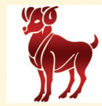

मेष राशि - मंगल नीच होने के कारण घरेलु सुखों में बाधा। अपने वाणी-व्यवहार की अकुशलता से परेशानी, संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। परदेशवास, व्यर्थ की भागदौड़ और धनागम में बाधा, फिजूलखर्ची होगी। पारिवारिक दायित्व की वृद्धि, विपरीत स्थितियों में क्रमशः सुधार, भोग-विलासादि कार्यों पर व्यय, कार्यों में बाधाएँ रहेंगी। धर्माचरण करें।

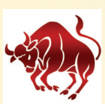

वृषभ राशि - यह माह आपके लिए मध्यम रहेगा। पराक्रम धैर्य, विवेकशीलता की वृद्धि, दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। धर्म-कर्म में विशेष रुचि होगी, रचनात्मक प्रवृत्ति, आरोग्य सुख, अनेक स्त्रोतों से आय मिलेगा। शुक्र धनु (अष्टमस्थ) राशिस्थ रहने से पारिवारिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी उलझनें बढ़ेगी।

मिथुन राशि - मास फल मिश्रित रहेगा। बुध अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष ध्यान रखें। अपने निकटस्थ भाई-बन्धुओं से मन-मुटाव, बनते कार्यों में विघ्न। अधिक लेन-देन से सावधानी, गृहस्थ जीवन सुखी, व्यापार-उद्योग में तनाव व सामान्य सफलता। समस्याओं का समाधान, उत्तरार्ध में व्यापार क्षेत्रों में सफलता।

कर्कटक राशि - शनि की ढैय्या तथा भाग्यस्थ राहु के प्रभाव से परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। स्वास्थ्य चिन्ता, हृदय रोग, उच्चरक्त चाप से ग्रसित रोगियों को विशेष सावधानी जरूरी। आर्थिक संतुलन, निर्वाह योग्य धन प्राप्ति, विचारों में उग्रता, कौटुम्बिक दायित्व निर्वहन में कठिनाई।

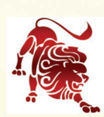

सिंह राशि - मानसिक-शारीरिक कष्ट, निरर्थक भागदौड़, अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ कम ही रहेगा। वाद-विवाद से कष्ट, प्रतियोगी क्षेत्र में श्रमपूर्ण सफलता, अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर-विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है।

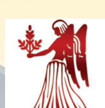

कन्या राशि - उदर-वायु विकार से कष्ट, बुध वृश्चिक राशिगत रहने से व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। शक्ति संवर्धन, अपने इष्ट मित्रों का साथ, सगे संबंधियों का पूर्ण सहयोग, सम्मान लाभ, शैक्षणिक अनुकूलता। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से खर्च अधिक होगा। केतु के कारण मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

तुला राशि - आरोग्य सुख, खर्चों की अधिकता से मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक रहेगी। अपने बन्धु-बान्धवों से मनमुटाव, रोग, शत्रु-ऋण बाधा से मुक्ति, नौकरी में सुखद बदलाव, धर्म-कर्म, सामाजिक कार्यों में रुचि। शुभ कार्यों में धन व्यय, छात्रों के लिए प्रतियोगी क्षेत्रों में प्रतिस्पर्द्धा अधिक होने के कारण परिश्रम करना होगा।

वृश्चिक राशि - दिनचर्या नियमित होने के कारण स्वास्थ्य सुख। सूर्य नीचराशिगत तथा मंगल कर्कराशिगत होने से व्यवसाय में अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष उपरान्त धन की प्राप्ति होगी। राजकीय पक्ष का सहयोग, गृह-भूमि वाहन सुख, नौकरी में उल्लास, कृषि कार्यों में प्रगति। घरेलु समस्याएँ, मानसिक तनाव, सिरदर्द व आंखों में कष्ट की सम्भावना बनी रहेगी।

धनुष राशि - अपने स्वास्थ्य के ऊपर ध्यान रखे वरना भुगतना पड़ सकता है। आत्मविश्वास में वृद्धि, निर्माण कार्यों में प्रगति। पारिवारिक-घरेलु चिन्ता, दूसरों के ऊपर विश्वास न करे कार्यों में धोखा होगा। आर्थिक संतुलन, मित्रों का सहयोग, उद्योग-व्यापार में सफलता, अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखे, संतान चिंता, मांगलिक कार्यों में धन व्यय।

मकर राशि - शनि वक्री होने से शारीरिक कष्ट, अनावश्यक तनाव, विवाद से परेशानी, स्वास्थ्य सामान्य। किसी नवीन योजना पर विचार-विमर्श होगा, संतान सुख, रोजी-रोजगार में अनुकूलता रहेगी। पारिवारिक जनों से मतभेद-कलह। आर्थिक-व्यापारिक पक्ष में मजबूती बढ़ेगी, वाहन ध्यान से चलाए दुर्घटना होने की संभावना रहेगी।

कुंभ राशि - यह आपके लिए उत्तम रहेगा, पदाधिकारी-उच्चप्रतिष्ठित लोगों से संपर्क, धर्म-कर्म में अभिरुचि। अपनों का सहयोग, इष्टमित्र-कुटुम्बियों के प्रति सम्मान की भावनाएँ। भूमि-भवन-वाहनादि का सुख, कभी-कभी उथल-पुथल एवं उतार-चढाव का सामना रहेगा। व्यापारिक सफलता, पद-प्रतिष्ठा सम्मान में वृद्धि।

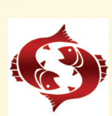

मीन राशि - साढ़ेशाती के प्रभाव से बनते कार्यों में विघ्न, मानसिक-शारीरिक व्यथा, कटुतिक्त मिश्रित अनुभव। मन उदासीन रहेगा। राजकीय उलझनों से बचकर रहें, अपने मित्रों के सहयोग से कार्यों में प्रगति होगी। छात्रों के लिए प्रतियोगि छात्रों में सफलता, पारिवारिक-कुटुम्बिक उत्तरदायित्व में कठिनाई। उत्तरार्ध में परिवर्तन होगा।

(नीतिकथा)

भगवान के दर्शन

- श्री के.रामनाथन

कुसुमपुर नामक गाँव में कन्हैया और गोपाल नाम के दो मित्र रहते थे। वे दोनों गहरे मित्र थे। उनमें कन्हैया धनवान था और उसके पास खेती के लिये जमीन और गाय-बैल भी थे। गोपाल गरीब किसान था और वह अपने घर के आस-पास के एक खेत में काम करके अपना जीवन बिता रहा था। गरीब और अमीर होने पर भी उन दोनों में गाढ़ी मित्रता बनी हुई थी। वे दोनों हर रोज शामके समय उस गाँव के बीच में होते बरगद के पेड़ के नीचे आराम करने आते और थोड़े समय तक बहस करके अपने घर वापस लौटते थे।

उन दोनों के मन में यह इच्छा बनी हुई थी कि एक न एक दिन तिरुपति जाकर भगवान बालाजी के दर्शन करें। उसके लिये गरीब किसान गोपाल अपनी कमाई से जो पैसा बचता था उसे तीर्थयात्रा करने के लिये अलग ले रखता था। कन्हैया के लिये पैसे की कोई कमी नहीं थी। इसलिये उसने ऐसा नहीं सोचा था। एक दिन वे दोनों हमेशा की तरह शामके समय में गाँव के बीच में उस बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर बातें कर रहे थे। तब कन्हैया तिरुपति की तीर्थयात्रा के बारे में कह रहा था। उस समय गाँव के विष्णु मन्दिर में पूजा कार्य करते एक पुजारी वहाँ आया। उसने उन दोनों को देखकर खुशी से कहा, धरती आकाश में पहुँच जाने पर भी और आकाश धरती पर आने पर भी तुम दोनों का इस प्रकार हर दिन मिलने का काम नहीं रुकेगा। तुम दोनों की मित्रता से मुझे बडे गर्व का अनुभव हो रहा है। क्योंकि सच्चा मित्र जीवन के लिये उत्तम मार्गदर्शक है। इसलिए तुम दोनों सदा ऐसे ही रहो।

पुजारी के कहने के बाद गोपाल ने उससे तिरुपति तीर्थयात्रा जाने की उन दोनों की इच्छा के बारे में बताया। यह सुनकर पुजारी ने कहा कि तुम लोगों का ऐसा सोचना उत्तम है। इस प्रकार करने से तुम लोगों के मन में भक्ति के साथ शांति भी बनी रहेगी। इस प्रकार की तीर्थयात्रा से घर की समृद्धि भी होगी। लेकिन इसमें एक बात ध्यान में रखनी है। भगवान बालाजी के दर्शन करना चाहने पर भी जब वे हमें दर्शन देने के लिए सोचते हैं तभी हमें उनके दर्शन प्राप्त होगा। इसलिए आप विलम्ब न करके तीर्थयात्रा के लिए उचित प्रबंध कर लीजिए और भगवान की इच्छा पर आप लोगों को उनके दर्शन प्राप्त होंगे। इतना कहकर वह पुजारी पूजा कार्य करने के लिए मन्दिर की ओर निकल गया।

उसके बाद गोपाल की मजबूरी पर कन्हैया ऐसे निर्णय पर पहुँचा कि तीन दिन बाद तीर्थयात्रा के लिए निकलेंगे। उन तीन दिनों में कन्हैया ने अपने पुत्र को बुलाकर खेत में करने वाले काम के बारे में समझा दिया। तीन दिन बाद वे दोनों मित्र तिरुपति तीर्थयात्रा जाने निकल पड़े। वे दोनों रास्ते में खाने के लिये आवश्यक रोटी और धन के साथ निकल पड़े। उनको तिरुपति पहुँचने के लिए कई गाँव को पार करने की जरूरत थी और यात्रा भी पैदल थी। इसलिए वे दोनों हर दिन रात को किसी गाँव में ठहरकर अगले दिन अपनी यात्रा जारी रखते थे।

ऐसे ही जाते समय वे दोनों चन्द्रगिरि नामक एक छोटे गाँव में आ पहुँचे। उस समय शाम होने वाली थी और गोपाल को अधिक प्यास लगी थी। इसलिए उसने अपने मित्र कन्हैया से कहा कि यहाँ आस-पास में पानी की सुविधा नहीं है। इसलिए मैं वहाँ दूर स्थित उस झोंपड़ी में चलकर पानी पीकर आता हूँ, तब तक तुम आराम करो। उसके लिये कन्हैया ने कहा कि इस गाँव में घर की संख्या बहुत कम है। तुम वहाँ जाकर पानी पीकर आओ तब तक मैं अगले गाँव में पहुँच जाता हूँ और तुम मुझे वहाँ आकर मिलो, वही भला है। गोपाल उसे मानकर उस झोंपड़ी की ओर जा पहुँचा और कन्हैया अगले गाँव की ओर निकल पड़ा।

गोपाल ने उस झोपड़ी के सामने जाकर पानी लाकर देने के लिए आवाज दी, पर अन्दर से कोई नहीं आया। इसलिए वह खुद अन्दर गया और वहाँ देखा कि एक युवक, एक औरत और दो बच्चे बेहोश पड़े थे। यह देखकर गोपाल चौंक उठा। इतने में वहाँ लेटा वह कमजोर युवक धीमी आवाज में कहा कि हम सब खाना खाकर पाँच दिन हो गये हैं। हमें पानी लाने के लिए निकली मेरी पत्नी भी उधर फिसलकर गिर पड़ी है। हमें किसी न किसी प्रकार बचाईये। गोपाल ने उनकी दशा देखकर तुरंत एक बर्तन लेकर पानी की तलाश में कहीं किसी कुएँ को ढूँढ़ते हुए निकला।

बहुत दूर चलने के बाद उसने एक कुएँ को देखा और लाये बर्तन में पानी भरकर ले आया। उसने उन सबको पानी पिलाया और अपने साथ लाई सूखी रोटियों को पानी में भिगोकर उनको खाने के लिये दिया। अब वे सब उठकर बैठ गये। उस युवक ने कहा कि हमें खाना देकर प्राण दिये आप भगवान ही हैं। उसने यह भी कहा कि गाँव में वर्षा न होने के कारण बैल-बकरियों को बेच दिया और अपने खेत को गिरवी रख दी। सब सुनकर गोपाल ने अपने पैसों की सहायता से उनके गिरवी रखे खेत को लौटाया और कम जल में सब्जी आदि की खेती करने के लिए समझाया। उसके अनुसार परिवार के लोगों ने कठोर परिश्रम किया और उन सब्जियों को पास के गाँवों में बेचकर पैसा कमाये। उन परिवारवालों को प्राण के साथ जीवन भी दिये गोपाल भगवान के बराबर दीख पड़ा। इतने में दो महीने बीत गये और गोपाल अपनी तीर्थयात्रा जारी करने के लिए तैयार हुआ। लेकिन घर के लोग उसे भोजन तैयार नहीं थे। उन्होंने बड़े स्नेह से उसे वहीं और कुछ महीने ठहरने की मजबूरी की।

लेकिन गोपाल एक दिन रात उनसे कहे बिना उस घर से तीर्थयात्रा करने निकल पड़ा। थोड़ी दूर आने के बाद उसने अपनी थैली में देखा तो उसमें उतने पैसे नहीं थे। इसलिए वह तीर्थयात्रा का विचार छोड़कर अपने गाँव की ओर निकल पड़ा। तब उसे पुजारी की बात याद आयी। याने भगवान की इच्छा पर ही हमें उनके दर्शन प्राप्त होंगे। वह जब अपने गाँव में पहुँचा तब उसने देखा कि उसका मित्र कन्हैया पुजारी के साथ उस बरगद के पेड़ के नीचे बातें करते रहा है। उसे देखते ही मित्र कन्हैया ने बड़े आश्चर्य से कहा कि अरे क्या तुम अभी अपनी तीर्थयात्रा पूरी करके आ रहे हो? जब मैं तुमको छोड़कर अगले गाँव गया तब वहाँ दो दिन तक तुम्हारी इंतजार में रहा। मैंने सोचा कि तुम मुझे छोड़कर तिरुपति चले गये हो। इसलिए मैं वहाँ से तिरुपति आ पहुँचा। भगवान के दर्शन पाने के लिए वेंकटगिरि पर्वत पर बड़ी भीड़ लगी हुई थी और मैंने दूर से देखा था कि तुम भगवान के सामने उनके दर्शन कर रहे थे। मैंने सोचा कि बाहर आकर तुम से मिलेंगे, पर जब मैं बाहर आया तुमसे मिल नहीं पाया और बड़ी भीड़ के कारण मुझे भगवान के दर्शन भी नहीं मिले।

उसकी बात सुनकर गोपाल ने गाँव में घटित सारी घटनाओं के बारे में बताया। यह सुनकर कन्हैया को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि तिरुपति गये बिना इसको भगवान के दर्शन कैसे प्राप्त हुए। तब पुजारी ने उन दोनों की बातों को स्पष्ट समझते हुये कहा कि अरे गोपाल, तुम भगवान के दर्शन के लिये निकले थे, पर रास्ते में गरीब परिवार की मदद करने के लिए वहीं ठहर गये। तुमने मरने की दशा में रहे उस परिवार को जीवन दिलाये थे। इसलिए तुम उनको भगवान बराबर दिखायी दिये। भगवान गरीबों की सहायता करने के लिए खुद नहीं आते। वे किसी एक के द्वारा अपना कार्य करवा लेते हैं। यहाँ भी ऐसे ही हुआ है और तिरुपति गये बिना तुमको बालाजी के दर्शन भी प्राप्त हो गये। भगवान के दर्शन पाने के लिए तिरुपति तक गये कन्हैया को भीड़ के कारण नहीं मिल पाये। यहीं भगवान की लीला है। जो गरीब की सहायता करता है उसे भगवान खुद आकर दर्शन देते हैं।

पुजारी की बातों से अब दोनों स्पष्ट समझ गये कि गरीब जन की सेवा में भगवान के दर्शन प्राप्त होते हैं।

चित्रकथा

‘शाप ही वर है’

तेलुगु मूल - डॉ.के.रविचंद्रन्
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री टी.शिवाजी

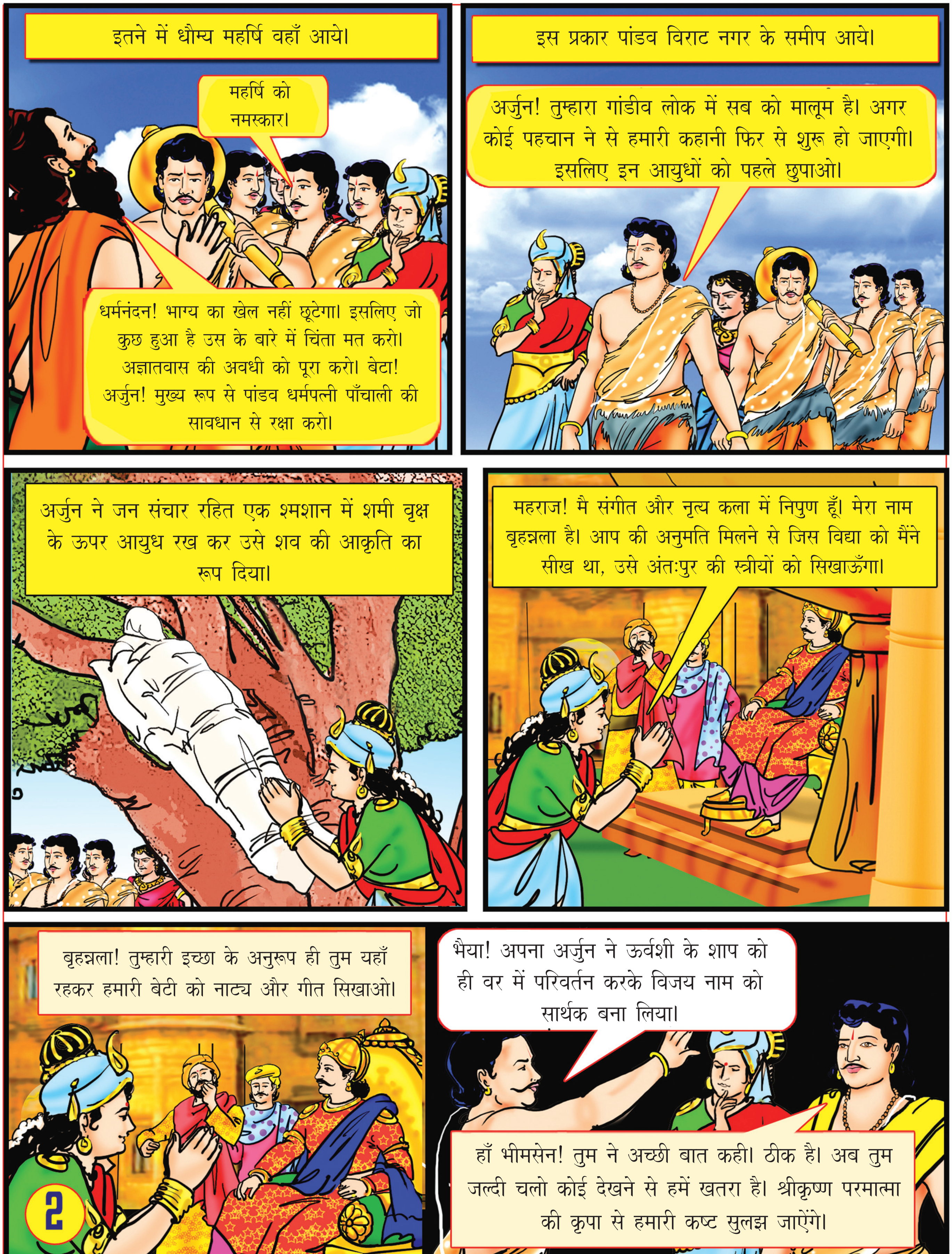
इतने में धौम्य महर्षि वहाँ आये।
महर्षि को नमस्कार।
धर्मनंदन! भाग्य का खेल नहीं छूटेगा। इसलिए जो कुछ हुआ है उस के बारे में चिंता मत करो। अज्ञातवास की अवधी को पूरा करो। बेटा! अर्जुन! मुख्य रूप से पांडव धर्मपत्नी पाँचाली की सावधान से रक्षा करो।
इस प्रकार पांडव विराट नगर के समीप आये।
अर्जुन! तुम्हारा गांडीव लोक में सब को मालूम है। अगर कोई पहचान ने से हमारी कहानी फिर से शुरू हो जाएगी। इसलिए इन आयुधों को पहले छुपाओ।
अर्जुन ने जन संचार रहित एक श्मशान में शमी वृक्ष के ऊपर आयुध रख कर उसे शव की आकृति का रूप दिया।
महराज! मै संगीत और नृत्य कला में निपुण हूँ। मेरा नाम बृहन्नला है। आप की अनुमति मिलने से जिस विद्या को मैंने सीख था, उसे अंतःपुर की स्त्रीयों को सिखाऊँगा।
बृहन्नला! तुम्हारी इच्छा के अनुरूप ही तुम यहाँ रहकर हमारी बेटी को नाट्य और गीत सिखाओ।
2
भैया! अपना अर्जुन ने ऊर्वशी के शाप को ही वर में परिवर्तन करके विजय नाम को सार्थक बना लिया।
हाँ भीमसेन! तुम ने अच्छी बात कही। ठीक है। अब तुम जल्दी चलो कोई देखने से हमें खतरा है। श्रीकृष्ण परमात्मा की कृपा से हमारी कष्ट सुलझ जाऐंगे।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., **चंदा नंबर**.......................
पता...
....
मोबाइल नं...

क्विज-28

1) तिरुचानूर में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?
ज)..
2) पांडवों का धर्मपत्नी का नाम क्या है?
ज)..
3) अर्जुन को किसने शाप किया?
ज)..
4) तिरुमल में गुरुवार के दिन संपन्न करने वाली सेवा का नाम क्या है?
ज)..
5) श्रीवैष्णव भक्त लोग आल्वार कितने लोग है?
ज)..
6) हाथी सहित लक्ष्मी रूप का नाम क्या है?
ज)..
7) धनुर्मास को छोडकर हर दिन तिरुमल मंदिर में संपन्न करनेवाली सर्वप्रथम सेवा क्या है?
ज)..
8) तिरुमल में चक्रस्नान कार्यक्रम को किस जगह पर आयोजित करते है?
ज)..
9) अंजनादेवी का पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
10) तिरुचानूर में विराजित पुष्करिणी का नाम क्या है?
ज)..
11) पांडवों ने अपने आयुधों को किस वृक्ष पर सुरक्षित किया है?
ज)..
12) किस व्यक्ति के कीर्तन को तांबे में लीख कर सुरक्षित किया?
ज)..
13) कुसुमपुर गाँव में हुए दो मित्रों का नाम क्या है?
ज)..
14) 'कैशिक द्वादशी' के दिन तिरुमल माडावीथियों में सूर्योदय के पहले जुलूस निकालने वाले दैव का नाम क्या है?
ज)..
15) लक्ष्मी का आठ रूपों का स्वरूप को क्या कहती है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

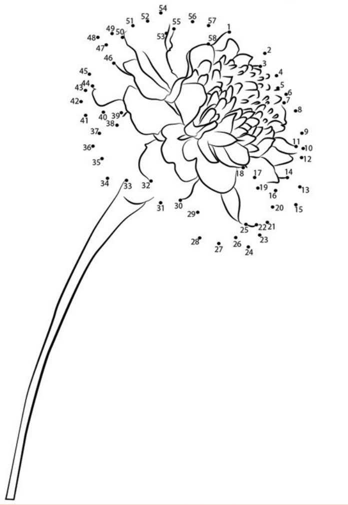

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) श्रीरंगनाथस्वामी	अ) पूरी
2) रामलल्ला	आ) द्वारका
3) श्रीकृष्ण	इ) श्रीरंगम्
4) जगन्नाथस्वामी	ई) तिरुपति
5) श्री बालाजी	उ) अयोध्या

1) इ 2) उ 3) आ 4) अ 5) ई

विष्णु गायत्री मंत्र

नारायणाय विद्महे
वासुदेवाय धीमही
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।

चित्रों को जोडिएँ

(a)

(b)

(c)

(d)

(e)

जवाब : a) 5, b)4, c)1, d)2, e)3.

(1)

(2)

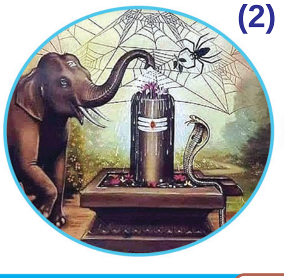

(3)

(4)

(5)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
ई.एम.ओ. (EMO) :
दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359, 2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर : 2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 04-10-2024 से दि. 12-10-2024 तक तिरुमल श्री बालाजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव में स्वामीजी विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर भक्तजनों को माडावीथियों में दर्शन दिया था। देश के चारो कोनों से पधारे हुए भक्तों को ति.ति.दे. ने विविध सुविधाएँ आयोजित किया है। इस संदर्भ में विविध कालाबृंद भी स्वामीजी के वाहन सेवा में भाग लिया। उसका छायाचित्र सप्तगिरि पाठकों के लिए...

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-10-2024 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.

श्री करियमाणिक्यस्वामीजी का पवित्रोत्सव, नगरी

दि.15-11-2024